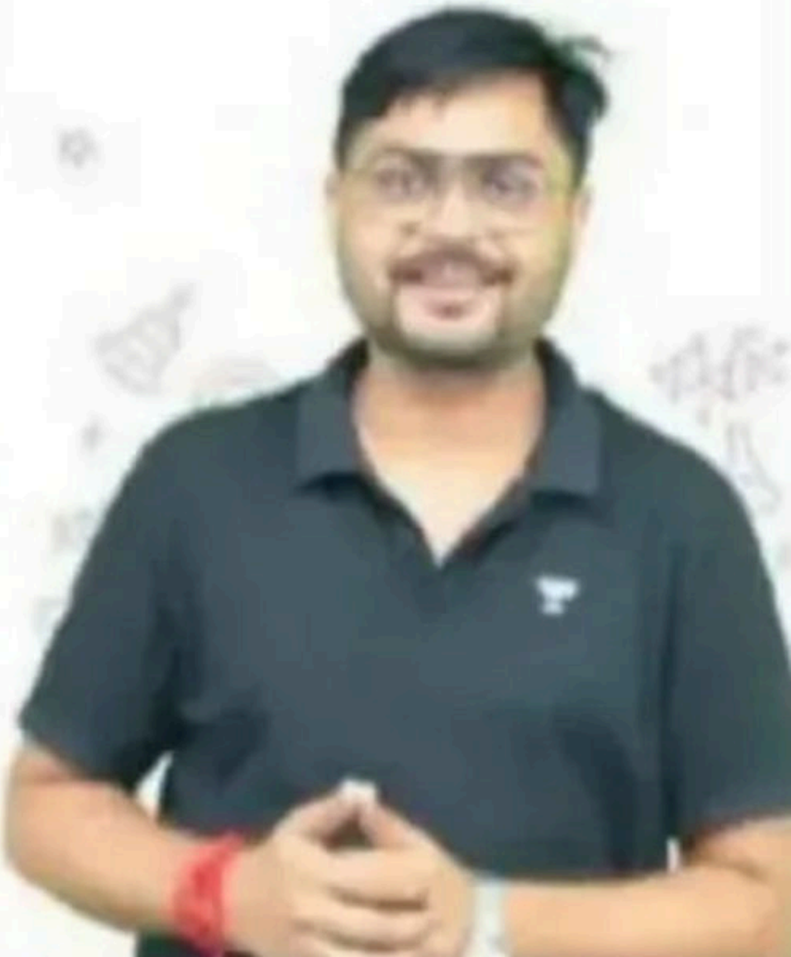
unacademy

UGC NET

unacademy

संस्कृत





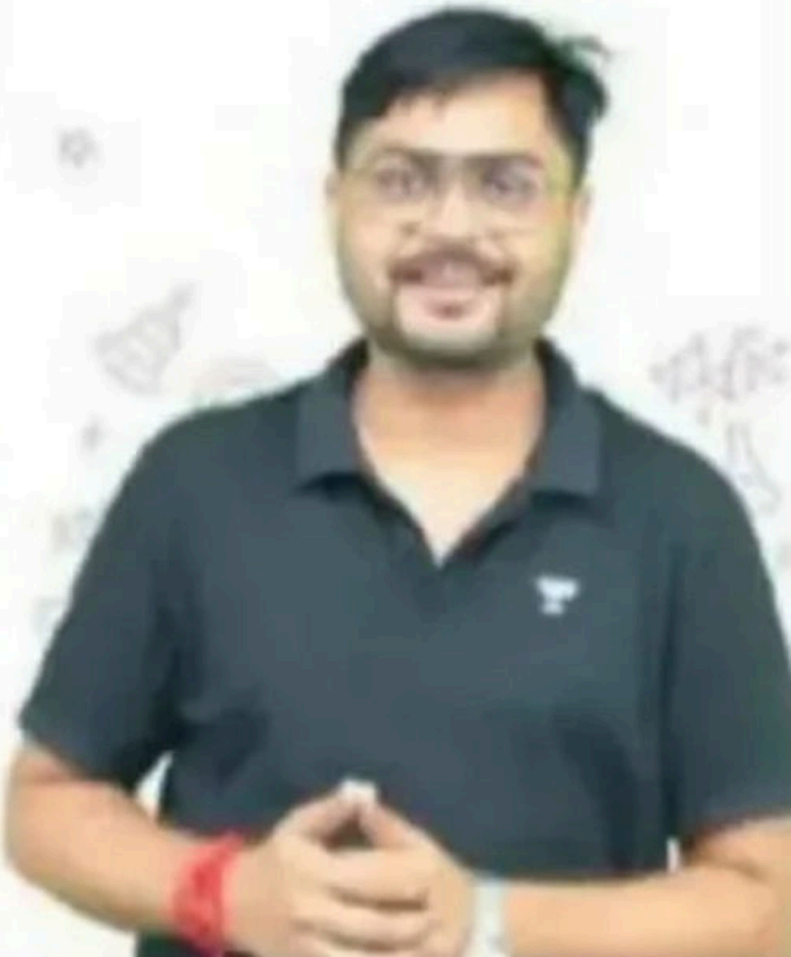
unacademy

UGC NET

unacademy

संस्कृत





कवि परिचय

(क) प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय-

1. भास



भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे, जिनके जीवनकाल के विषय में अधिक जानकारी नहीं है। भास का समय **100 ई.पू. से 200 ई.** के बीच का माना गया है। **'स्वप्नवासवदत्तम्'** उनके द्वारा लिखित सबसे चर्चित नाटक है, जिसमें एक राजा के अपने रानी के प्रति प्रेम और पुनर्मिलन की कहानी है। कालिदास जो गुप्तकालीन समझे जाते हैं, ने भास का नाम अपने नाटक में लिया है, जिससे लगता है कि वह गुप्त काल से पहले रहे होंगे पर इससे भी उनके जीवनकाल का अधिक ठोस प्रमाण नहीं मिलता। आज कई नाटकों में उनका नाम लेखक के रूप में उल्लिखित है, किन्तु **1912 में त्रिवेंद्रम में टी. गणपति शास्त्री** ने नाटकों की लेखन शैली में समानता देखकर उन्हें भास-लिखित बताया। संस्कृत नाटककारों में 'भास' का नाम उल्लेखनीय है। भास कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। सबसे पहले **'टी. गणपति शास्त्री'** ने भास के तेरह नाटकों की खोज की थी। अभी तक भास के विषय में जो सामग्री मिलती है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि भास ही लौकिक संस्कृत के प्रथम साहित्यकार थे। भास का आविर्भाव **ई. पू. पाँचवी - चौथी** शती में हुआ था। नाटककार भास के कुल 13 नाटकों की खोजें हैं

unacademy

भास का सामान्य परिचय-

- समय - ई. पू. चौथी शताब्दी ('टी. गणपति शास्त्री' के अनुसार)
  300 ई.(ए.बी.कीथ के अनुसार)
- उपाधि- कविताकामिनीहास, अग्निमित्र (ज्वलनमित्र), भासो हास।
- रचनाएं - 13

कृतियाँ-

1. **लोककथा पर आधारित रुपक** - प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम् अविमारकम्, चारुदत्तम् ।
2. **रामायणाश्रित रुपक -** प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक ।
3. **महाभारत मूलक-** ऊरुभंगम्, दूतवाक्यम्, पंचरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभारम् ।
4. **श्रीकृष्ण कथा पर आधारित रुपक** – बालचरितम्।

unacademy

2. अश्वघोष



अश्वघोष, बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक थे। **बुद्धचरितम्** इनकी प्रसिद्ध रचना है। **कुषाणनरेश कनिष्क** के समकालीन महाकवि अश्वघोष का **समय प्रथम शताब्दी ई.** का अन्त और द्वितीय का आरम्भ है।

जीवन वृत्त- उनका जन्म **साकेत (अयोध्या)** में हुआ था। उनकी **माता** का नाम **सुवर्णाक्षी** था। चीनी परम्परा के अनुसार महाराज **कनिष्क पाटलिपुत्र** के अधिपति को परास्त कर वहाँ से अश्वघोष को अपनी राजधानी **पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर)** ले गए थे। कनिष्क द्वारा बुलाई गई **चतुर्थ बौद्ध संगीति** की अध्यक्षता का गौरव एक परम्परा **महास्थविर पार्श्व** को और दूसरी परम्परा महावादी अश्वघोष को प्रदान करती है। ये **सर्वास्तिवादी बौद्ध** आचार्य थे जिसका संकेत **सर्वास्तिवादी "विभाषा"** की रचना में प्रायोजक होने से भी हमें मिलता है। ये प्रथमतः परमत को परास्त करनेवाले **"महावादी"** दार्शनिक थे। इसके अतिरिक्त साधारण जनता को बौद्धधर्म के प्रति **"काव्योपचार"** से आकृष्ट करनेवाले महाकवि थे।

unacademy

अश्वघोष का सामान्य परिचय-

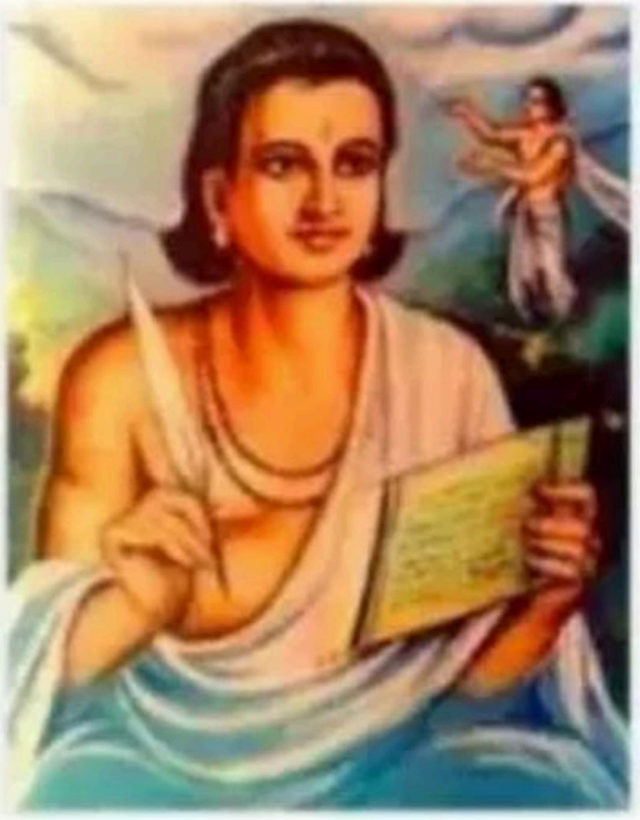
- समय – प्रथम शताब्दी ई.
- जन्म – साकेत (अयोध्या)
- माता – सुवर्णाक्षी
- उपाधि- आर्यभदन्त, बौद्धभिक्षु, राष्ट्रपाल ।
- रीति- वैदर्भी

कृतियाँ-

- महाकाव्य- बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द ।
- नाटक- शारिपुत्रप्रकरणम् ।
- सुजुकी के अनुसार इनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ – पञ्चशिखा, सूत्रालङ्कारशास्त्र,महायानश्रद्धोत्पादसङ्ग्रह, महायानश्रद्धोत्पादसास्त्र, महायानभूमि गुह्यवाङ्मूल, दशशतकमार्गसूत्र ।

unacademy

3. महाकवि कालिदास



कालिदास (100 ई.पू.) संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं । कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें **राष्ट्रीय कवि** का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। **मेघदूतम्** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की **कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति** अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है ।

रीति- कालिदास **वैदर्भी रीति** के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने अपने श्रृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

समय- कालिदास किस काल में हुए और वे मूलतः किस स्थान के थे इसमें काफ़ी विवाद है। चूँकि, कालिदास ने द्वितीय शुंग शासक **अग्निमित्र** को नायक बनाकर **मालविकाग्निमित्रम्** नाटक लिखा और **अग्निमित्र** ने 170 ईसापूर्व में शासन किया था, अतः कालिदास के समय की एक सीमा निर्धारित हो जाती है कि वे इससे पहले नहीं हो सकते। छठीं सदी ईसवी में **बाणभट्ट** ने अपनी रचना **हर्षचरितम्** में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के एहोल शिलालेख में कालिदास का वर्णन है अतः वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस प्रकार कालिदास के

unacademy

दुर्भाग्यवश इस समय सीमा के अन्दर वे कब हुए इस पर काफ़ी मतभेद हैं। विद्वानों में (i) द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का मत (ii) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत (iii) तृतीय शताब्दी ईसवी का मत (iv) चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत (v) पाँचवी शताब्दी ईसवी का मत, तथा (vi) छठीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का मत प्रचलित थे। इनमें ज्यादातर खण्डित हो चुके हैं या उन्हें मानने वाले कुछ लोग ही हैं किन्तु मुख्य संघर्ष 'प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत और 'चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत' में है।

वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया। **विक्रमोर्वशीयम्** के नायक पुरुरवा के नाम का विक्रम में परिवर्तन से इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदास उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के राजदरबारी कवि थे। इन्हें **विक्रमादित्य के नवरत्नों** में से एक माना जाता है।

कालिदास के अस्तित्व के कुछ साक्ष्य **बिहार के मधुबनी** जिला में भी मिलते हैं। कहा जाता है विद्योत्तमा (कालिदास की पत्नी) से शास्त्रार्थ में पराजय के बाद कालिदास यहीं गुरुकुल में रुके। कालिदास को यहीं ज्ञान का वरदान मिला। यहां आज भी कालिदास का डीह है। यहाँ की मिट्टी से बच्चों के प्रथम अक्षर लिखने की परंपरा आज भी यहाँ प्रचलित है। कुछ विद्वानों ने तो उन्हें बंगाल और उड़ीसा का भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहते हैं कि कालिदास की श्रीलंका में हत्या कर दी गई थी लेकिन विद्वान इसे भी कपोल-कल्पित मानते हैं।

कालिदास का सामान्य परिचय-

- **समय** – प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व ।
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **रीति एवं गुण** – वैदर्भी तथा प्रसाद
- **प्रधानरस** – श्रृंगार
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप
- **प्रिय अलंकार** – उपमा
- **प्रिय रस** – श्रृंगार
- **पत्नी** – विद्योतमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र**- ब्राह्मण
- **उपासक** – शिव के
- **रचनाकाल** – 150 ई. पू. के पश्चात् तथा 600 ई. के पहले

unacademy

कालिदास के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- कालिदास ने काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति की।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन –
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'
- इसके उत्तर में पत्नी विद्योतमा का कथन –
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'
- इन तीन पदों से कालिदास ने तीन काव्यों की रचना की –
- अस्ति से – **'कुमारसम्भवम्'** – अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा..
- कश्चित् से – **'मेघदूतम्'** – कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...
- वाग् से – **'रघुवंशम्'** – वागर्थाविव सम्पृक्तौ...
- राजा विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्न थे जिनमें से एक कालिदास भी थे –

unacademy

4. शूद्रक



शूद्रक गुप्तकाल में उत्पन्न हुए । उनका प्रसिद्ध नाटक **'मृच्छकटिकम्'** है, जिसे सामाजिक नाटकों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अङ्क हैं। इनका रचनाकाल तीसरी चौथी शताब्दी ई. माना जाता है। इसके दस अंकों में ब्राह्मण **'चारुदत्त'** जो समय-चक्र से निर्धन है तथा उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका **'वसंतसेना'** के आर्दश प्रेम की कहानी वर्णित है।

unacademy

भाषा शैली- मृच्छकटिकम् की शैली सरल तथा वर्णन विस्तृत है। प्राकृत भाषा की सभी शैलियों का प्रयोग इसमें एक साथ मिलता है। प्रथम बार संस्कृत में शूद्रक ने ही राज परिवार को छोड़कर समाज के मध्यम वर्ग के लोगों को अपने नाटक के पात्र बनाये। इसके कथानक तथा वातावरण में स्वाभाविकता है । इस दृष्टि से शूद्रक की नाट्य कला बड़ी प्रशंसनीय है। पाश्चात्य आलोचकों ने इसकी बड़ी सराहना की है तथा **मृच्छकटिकम्** को सार्वभौम आकर्षण का नाटक बताया है, जिसका सफल मंचन विश्व में कहीं भी किया जा सकता है। इनके विषय में प्रसिद्ध उक्ति है (**शूद्रकः अग्निं प्रविष्टः**) अर्थात् शूद्रक राजा अग्नि में प्रविष्ट हुए ।

unacademy

शूद्रक का सामान्य परिचय-

- **समय** - तीसरी चौथी शताब्दी ईसवी।
- **कृति** - मृच्छकटिकम् ।
- शूद्रक ने 110 वर्ष वर्षों की आयु व्यतीत की थी।
- शूद्रक बड़े विद्वान और शक्तिशाली योद्धा थे।
- शूद्रक ने **अश्वमेध** याग किया था।
- शूद्रक ने अपने पुत्र का राज्याभिषेक करके अग्नि में प्रवेश किया-

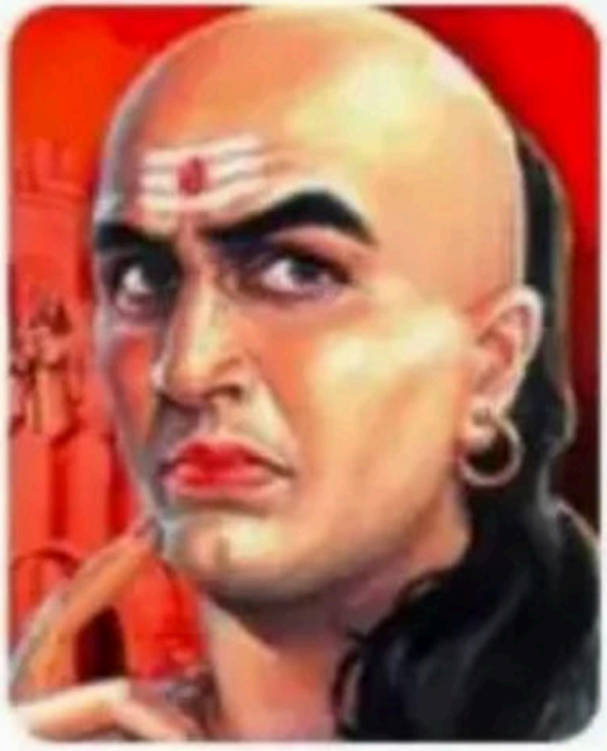
  लब्ध्वा चायुः शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्रविष्टः -

  (मृच्छकटिकम्)

unacademy

5. विशाखदत्त

विशाखदत्त गुप्तकाल की विभूति थे। विशाखदत्त **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** के आश्रित सामंत थे। इनका समय **पाँचवी छठी शताब्दी ई.** है। इनके दो नाटक प्रसिद्ध हैं- **मुद्राराक्षस** तथा **देवीचन्द्रगुप्तम्**। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्तमौर्य के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख मिलता है। **देवीचन्द्रगुप्तम्** से गुप्तवंशी शासक रामगुप्त के विषय में सूचनाएँ प्राप्त होती है। यह नाटक अपने मूल रूप में नहीं मिलता। इसके कुछ अंश **'नाट्य दर्पण'** में प्राप्त होते हैं। **विशाखदत्त** ऐतिहासिक प्रवृत्ति के लेखक हैं। इनके नाटक **वीर रस** प्रधान हैं। मुद्राराक्षस में **प्रेमकथा, नायिका, विदूषक** आदि का अभाव है तथा इस दृष्टि से यह संस्कृत साहित्य में अपना अलग स्थान रखता है।



unacademy

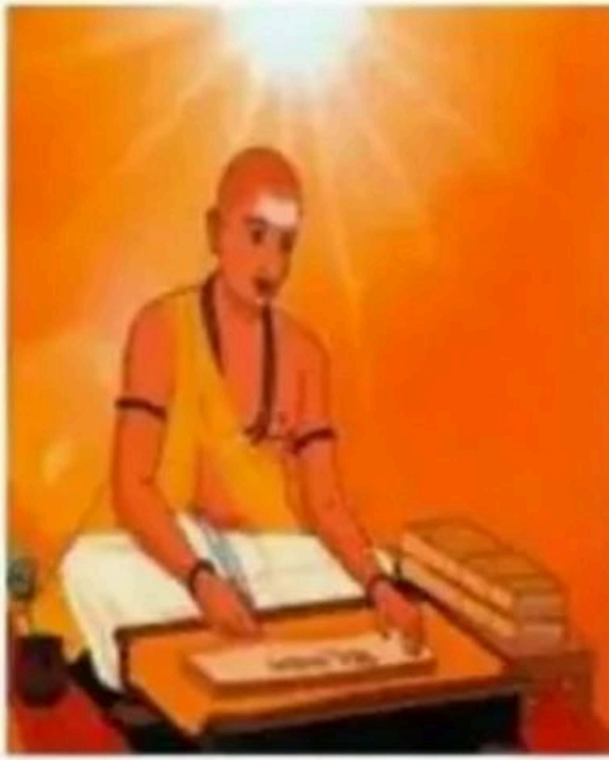
विशाखदत्त का सामान्य परिचय-

- **समय** – पांचवी छठी शताब्दी ई.
- **स्थान** – पाटलपुत्र (संभावित)
- **पिता**- महाराज पृथु(परन्तु कुछ संस्करण में पिता का नाम भास्कर दत्त भी प्राप्त होता है)।
- **पितामह**- सामंत वटेश्वरदत्त
- **प्रधानरस** - वीर
- **उपाधि**- दत्त (वटेश्वरदत्त, भास्करदत्त, विशाखदत्त)

कृतियाँ-

2. मुद्राराक्षस
2. देवीचन्द्रगुप्तम्
3. अभिसारवञ्चितकम्
4. राघवानंद।

6. भारवि



भारवि संस्कृत के महान कवि हैं। वे अर्थ की गौरवता के लिये प्रसिद्ध हैं **"भारवेरर्थगौरवम्"**। **किरातार्जुनीयम्** महाकाव्य उनकी महान रचना है। इसे एक उत्कृष्ट श्रेणी की काव्यरचना माना जाता है। इनका काल **छठी-सातवीं शताब्दी (560 ई. से 615 के बीच)** बताया जाता है। **भारवि** सम्भवतः **दक्षिण भारत** के कहीं जन्मे थे। उनका रचनाकाल पश्चिमी **गंग राजवंश** के राजा दुर्विनीत तथा पल्लव राजवंश के राजा **सिंहविष्णु** के शासनकाल के समय का है। कवि ने बड़े से बड़े अर्थ को थोड़े से शब्दों में प्रकट कर अपनी काव्य-कुशलता का परिचय दिया है। भारवि ने केवल **एक अक्षर** "न" वाला श्लोक लिखकर अपनी काव्यचातुरी का परिचय दिया है। एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।

भारवि का सामान्य परिचय-

- **समय** - 560 ई. से 615 के मध्य
- **माता**- सुशीला
- **पिता**- श्रीधर (अवंतीसुंदरी कथा के अनुसार नारायणस्वामी)
- **पुत्र**- मनोरथ
- **गोत्र** - कुशिक
- **पत्नी**- रसिकवती (रासिका)
- **सम्प्रदाय** - शैव
- **निवासी**- 1. अचलपुर (दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश में)
  2. धारानगरी (अवंतीसुंदरी कथा के अनुसार)

भारवि के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- **वास्तविक नाम**- (दामोदर) भारवि इनकी उपाधि थी
- **भारवि का वंशवृक्ष**

श्रीधर (पिता)
|
भारवि
|
मनोरथ (पुत्र)
|
वीरदत्त-गौरी (पौत्र)
|
दण्डी (प्रपौत्र)

आश्रयदाता - 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज),

2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार),

3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)

भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।

भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या 'रीतिशैली' के जन्मदाता है, इनके काव्यमार्ग को विचित्रमार्ग कहते हैं।

श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को 'ट्रावनकोर' का निवासी सिद्ध करते हैं।

भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।

आचार्य 'मल्लिनाथ' ने भारवि के **'किरातार्जुनीयम्'** पर 'घण्टापथ' नाम की टीका लिखी है।

- मल्लिनाथ भारवि के काव्य की उपमा 'नारिकेलफल' से क
  हैं- **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**।
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित
- भारवि किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ
  शिशुपालवधम् को **'श्रयन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष
  नैषधीयचरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

7. माघ

माघ का समय 675 ई. के लगभग 7 वीं शताब्दी का अंतिम चरण है। माघ मारवाड़ के प्राचीनतम महाकाव्य 'शिशुपालवध' के रचियता थे। माघ के दादा 'सुप्रभदेव' 'वर्मलात' नामक राजा के प्रधान मन्त्री थे। 'माघ' का जन्म भीन-माल के एक प्रतिष्ठित धनी श्रीमाली ब्राह्मण-कुल में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम विद्यावती था। वे सर्वश्रेष्ठ संस्कृतमहाकवियों की त्रयी (माघ, भारवि, कालिदास) में अन्यतम हैं। उन्होंने शिशुपालवध नामक केवल एक ही महाकाव्य लिखा। इस महाकाव्य में श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चेदिनरेश शिशुपाल के वध का सांगोपांग वर्णन है। उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य - इन तीन गुणों का सुभग सह-अस्तित्व माघ के कमनीय काव्य में मिलता है, अतः उनके बारे में "माघे सन्ति त्रयो गुणाः" यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। इनके पिता का नाम दत्तक था और माता का नाम ब्राह्मी था। माघ की प्रशंसा में कहा गया है



unacademy

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः" ॥

कालिदास उपमा में, भारवि अर्थगौरव में, और दण्डी पदलालित्य में बेजोड़ हैं। लेकिन माघ में ये तीनों गुण हैं। शिशुपालवध मे रैवतक पर्वत की हाथी से और हाथी के बंधे घंटे की तुलना नही बल्कि रैवतक पर्वत के दोनो ओर जो सूर्य और चन्द्रमा है उसकी उपमा स्वर्ण और रजत से निर्मित घंटे से की गई है अतः माघ को घंटा माघ कहा जाता है।

माघ का सामान्य परिचय-

- समय- 675 ई.
- पिता- दत्तक
- माता – ब्राह्मी
- जन्मस्थान- भीन-माल (गुजरात)

उपाधि- घंटा माघ,

कृति- 'शिशुपालवधम्'।

unacademy

8. हर्ष



हर्षवर्धन प्राचीन भारत में एक राजा था जिसने उत्तरी भारत में अपना एक सुदृढ़ साम्राज्य स्थापित किया था। इनका समय **सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध** माना जाता है। वह अंतिम हिंदू सम्राट् था जिसने पंजाब छोड़कर शेष समस्त उत्तरी भारत पर राज्य किया। शशांक की मृत्यु के उपरांत वह बंगाल को भी जीतने में समर्थ हुआ। हर्षवर्धन के शासनकाल का इतिहास मगध से प्राप्त दो ताम्रपत्रों, राजतरंगिणी, चीनी यात्री ह्वेनसाँग के विवरण और हर्ष एवं बाणभट्ट रचित संस्कृत काव्य ग्रंथों में प्राप्त है।

कृतियाँ- प्रियदर्शिका- 4 अंक,
रत्नावली- 4 अंक,
नागानन्द- 5 अंक,

उपाधि- अनङ्ग, राजा, कवीन्द्र, कविता का हर्ष ।

हर्ष का सामान्य परिचय-

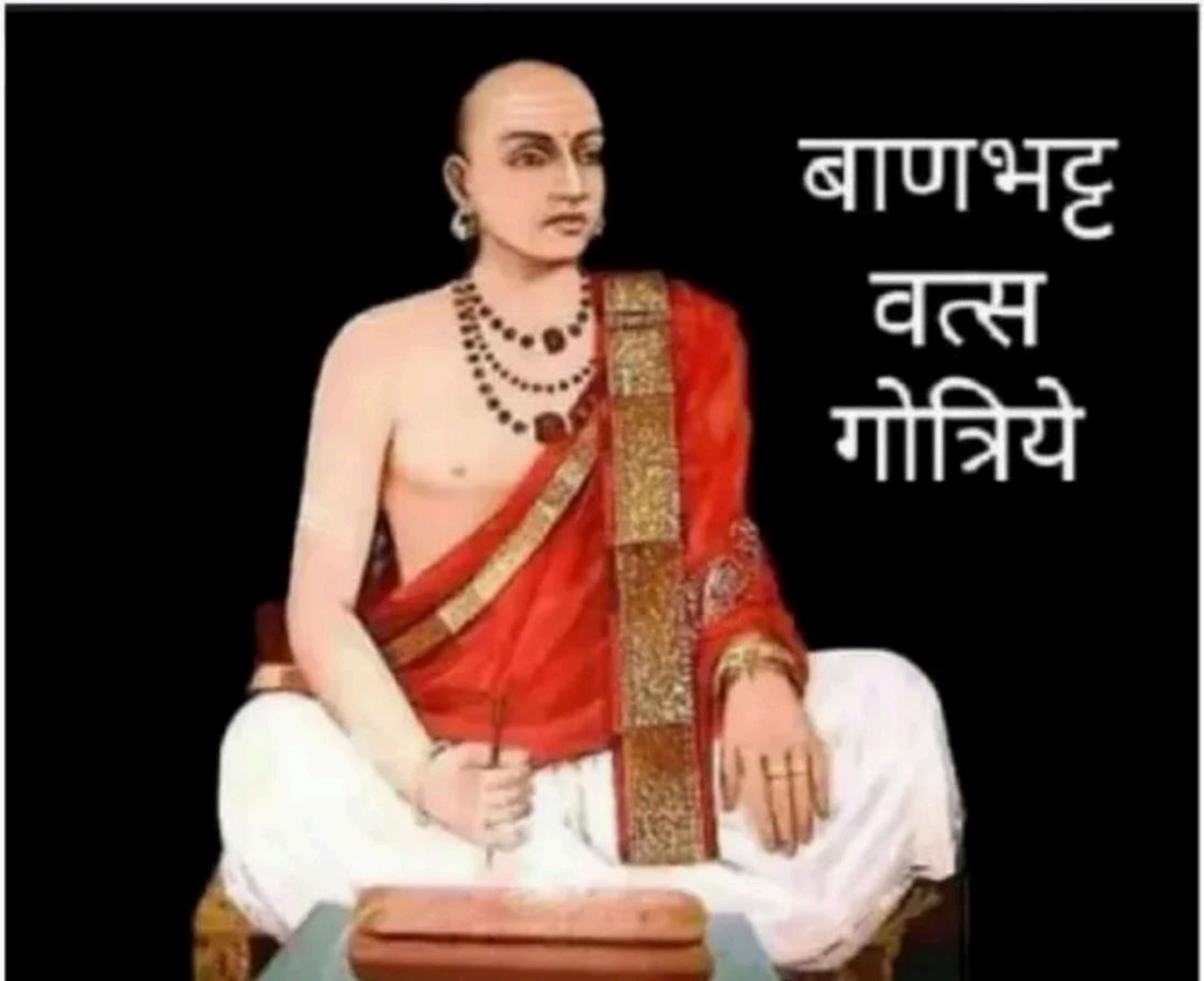
- समय - सातवीं शताब्दी पूर्वार्ध
- पिता- प्रभाकरवर्धन,
- बड़ा भाई- राज्यवर्धन,
- बहन- राज्यश्री,
- निवास- स्थाणीश्वर,
- इन्होंने अवन्तिवर्मा के साथ मिलकर 562 ई. में हूणों को पर
  किया।
- ये प्रभाकरवर्धन के तीन पुत्रों में अद्वितीय थे ।
- ह्वेनसांग की कृति 'सी यू की' में हर्ष के विषय में विस्तृत व
  मिलता है ।

unacademy

9. बाणभट्ट

बाणभट्ट संस्कृत साहित्य में ही एक ऐसे महाकवि हैं जिनके जीवन चरित के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। **'बाण भट्ट सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध** के संस्कृत गद्य लेखक और कवि थे। वह राजा **हर्षवर्धन** के आस्थान कवि थे। इनकी बाल्यावस्था में माता की मृत्यु और 14 वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु हो गई थी । उनके दो प्रमुख ग्रंथ हैं: **हर्षचरितम्** तथा **कादम्बरी**। **हर्षचरितम्** राजा हर्षवर्धन का जीवन-चरित्र था और कादंबरी दुनिया का पहला **उपन्यास** था। राजा हर्ष ने इनको **"महानयं भुजंग"** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा था । कादंबरी पूर्ण होने से पहले ही **बाणभट्ट** जी का देहांत हो गया तो उपन्यास पूरा करने का काम उनके पुत्र **भूषण भट्ट** ने अपने हाथ में लिया। दोनों ग्रंथ संस्कृत साहित्य के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते है।

unacademy



unacademy

यद्यपि बाणभट्ट की लेखनी से अनेक ग्रन्थ रत्नों का लेखन हुआ है किन्तु बाणभट्ट का महाकवित्व केवल **'हर्षचरित'** और **'कादम्बरी'** पर प्रधानतया आश्रित है। इन दोनों गद्य काव्यों के अतिरिक्त **मुकुटताडिका** (नाटक), **चण्डीशतकम्** और **पार्वती-परिणय** (नाटक) भी बाणभट्ट की रचनाओं में परिगणित हैं। इनमें **'पार्वतीपरिणय'** को **ए.बी. कीथ** ने बाणभट्ट की रचना न मानकर उसे **वामनभट्टबाण** (17 वीं शती) नामक किसी **दाक्षिणात्य वत्सगोत्रीय ब्राह्मण** की रचना माना है। गोवर्धनाचार्य का कथन है- **'वाणी बाणो बभूव'**।

बाणभट्ट का सामान्य परिचय-

- समय- चीनी यात्री ह्वेनसांग (629- 645) के लगभग ।
- पिता- चित्रभानु
- पितामह - अर्थपति
- माता- राजदेवी
- पुत्र- भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- बहन – मालती
- बाण के भाई – चित्रसेन तथा मित्रसेन
- वंश\गोत्र – वत्स वंश\वात्स्यायन
- उपासक – शैव
- रीति - पाञ्चाली
- निवास- प्रीतिकूट (शोण नदी के दक्षिण तट पर)
- शैली पांचाली

बाणभट्ट का वंशवृक्ष -

वत्स → कुबेर → पाशुपत → अर्थपति → चित्रभानु → बाणभट्ट

बाणभट्ट की उपाधि/प्रशस्तियाँ-

पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव

कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
वश्यवाणी चक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
गद्यसम्राट्	-	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं	–	समालोचक
बाणः कविनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
यादृक् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः	–	भोजराज

कृतियाँ-

- आख्यायिका - हर्षचरितम्,
- कथा - कादंबरी,
- मुक्तककाव्य - चंडीशतकम्,
- नाटक – मुकुटताडिकम्,पार्वतीपरिणय,

10. दंडी

दंडी संस्कृत के प्रसिद्ध साहित्यकार थे, जो छठी शताब्दी के अंत और सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में सक्रिय थे। संस्कृत श्रृंगारिक गद्य के लेखक और काव्यशास्त्र के व्याख्याकार के रूप में उनकी दो महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सामान्यत: निश्चित रुप से उनकी मानी जाती हैं। **'दशकुमारचरित'**, 1927 में **'द एडवेंचर्स ऑफ़ द टेन प्रिंसेज'** शीर्षक से अनुदित।

जन्म विवाद- दंडी के जीवन के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनाओं का बहुत अभाव है। कोई उन्हें सातवीं शती के उत्तरार्ध या आठवीं शती के आरम्भ का मानता है तो कोई इनका जन्म 550 और 650 ई. के बीच मानता है। अवंतीसुंदरी की कथा के अनुसार दंडी किरातार्जुनीयम् के रचयिता भारवी के प्रपौत्र थे । इनकी बाल्यावस्था में इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था ।

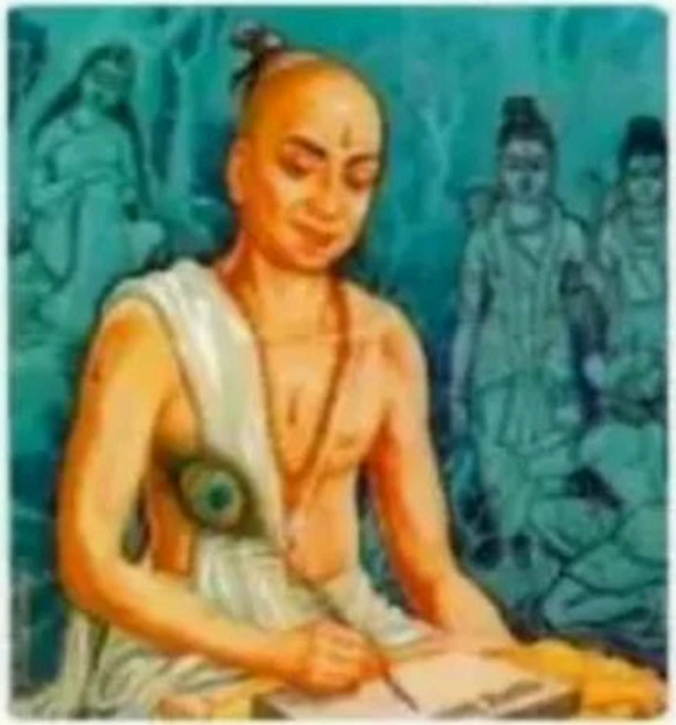
कृतियाँ-

1. दशकुमारचरितम्,
2. काव्यादर्श,

दण्डी का सामान्य परिचय-

- **समय** - छठी शताब्दी (550-650 ई.)
- **पिता** - वीरदत्त
- **माता**- गौरी
- **निवास**- दक्षिण में विदर्भ महाराष्ट्र ।
- भारवि के पुत्र- **मनोरथ**
- मनोरथ के चारों पुत्रों में छोटा पुत्र- **वीरदत्त**
- वीरदत्त के पुत्र- **दंडी** ।
- **भारवि → मनोरथ → वीरदत्त → दंडी** ।
- परिष्कृत गद्य शैली में जन्मदाता- **दंडी** ।
- **शैली** - वैदर्भी शैली भाषा गुण- प्रसाद माधुर्य गुण भावों की अभिव्यंजना शक्ति प्रबल है ।
- इनकी दृष्टि यथार्थवादी है, समाज के सभी वर्गों के पात्रों को लिया है, यह आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी और व्यवहारवादी हैं।

11. भवभूति



भवभूति संस्कृत के महान कवि एवं सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे। उनके नाटक कालिदास के नाटकों के समतुल्य माने जाते हैं। भवभूति ने अपने संबंध में **'महावीरचरितम्'** की प्रस्तावना में लिखा है। ये विदर्भ देश के **'पद्मपुर'** नामक स्थान के निवासी **भट्टगोपाल** के प्रपोत्र थे। इनके **पिता** का नाम **नीलकंठ** और **माता** का नाम **जतुकर्णी** था। इन्होंने अपना उल्लेख **'भट्टश्रीकंठ पदलांछनी भवभूतिर्नाम'** से किया है। इनके गुरु का नाम **'ज्ञाननिधि'** था। भवभूति विदर्भ (महाराष्ट्र राज्य) के **ब्राह्मण कन्नौज** (उत्तर प्रदेश राज्य) के राजा यशोवर्मन के दरबार में थे। भवभूति अपने तीन नाटकों के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध थे– **महावीरचरिम्, मालतीमाधवम्, उत्तररामचरितम्** । भवभूति का **जन्म सातवीं शताब्दी** के उत्तरार्ध माना जाता है ।

unacademy

भवभूति का सामान्य परिचय-

- समय – 650 ई. से 750 ई. के मध्य (सातवीं शताब्दी उत्तरार्ध)
- जन्म- दक्षिण भारत पद्मपुर,
- पिता- नीलकंठ,
- माता- जातुकर्णी या जतुकर्णी
- पितामह- भट्टगोपाल
- गुरु – 1. ज्ञाननिधि 2. कुमारिलभट्ट
- प्रिय छंद- अनुष्टुप, शिखरिणी
- प्रिय रस - करुण
- रीति- गौडी, उत्तररामचरितम् में वैदर्भी रीति का भी प्रयोग किया है।
- उपासक- शिव के,

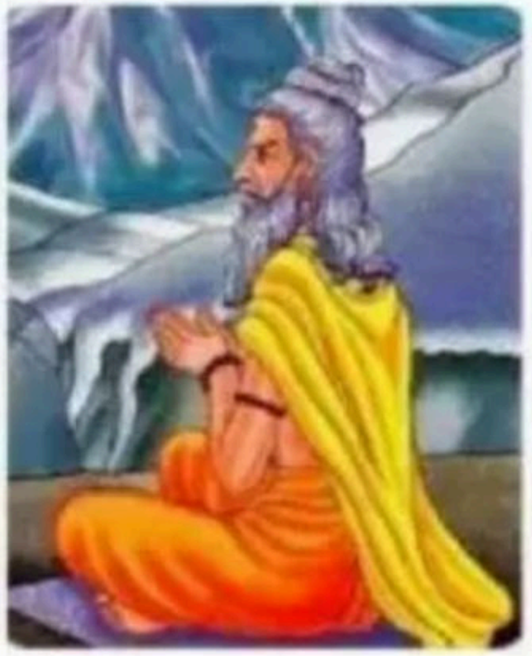
भवभूति के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- भवभूति का मूलनाम- श्रीकण्ठ (कवि के रूप में भवभूति के नाम से विख्यात)
- भवभूति का दार्शनिक नाम – **उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक।**
- ये विविध शास्त्रों के विशेषज्ञ थे अतः इनकों **"पदवाक्यप्रमाणज्ञः"** कहा जाता है ।
- **पद = (व्याकरण),** **वाक्य = (मीमांसा),**
- **प्रमाण = (न्याय),** **ज्ञः = (ज्ञाता)।**
- **'महावीरचरितम्'** में इन्होंने अपने को **'परिणतप्रज्ञः'** कहा है।
- **'उत्तररामचरितम्'** में इन्होंने अपने को **'वश्यवाक्'** कहा है।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है तथा भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।

कृतियां-

- ❖ नाटक- उत्तररामचरितम् (7अंक), महावीरचरितम (7अंक)
- ❖ प्रकरण ग्रंथ- मालतीमाधवम् (10अंक) ।

12. भट्टनारायण



भट्टनारायण संस्कृत के महान नाटककार थे। इनका समय **सातवीं आठवीं शताब्दी ई.** माना जाता है। भट्टनारायण का जीवनवृत्त अनिश्चित है किंतु वामन और आनंदवर्धनाचार्य के ग्रंथों में **वेणीसंहार** के उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि यह उनसे पूर्ववर्ती हैं। वे अपनी केवल एक कृति **वेणीसंहार** के द्वारा संस्कृत साहित्य में अमर हैं। संस्कृत वाङ्मय में समुपलब्ध नाटकों में इसका विशिष्ट स्थान है। विद्वज्जन इसे नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुकूल दृष्टिकोण से लिखा गया नाटक मानते हैं इसीलिए इसके उदाहरणों को अपने लक्षणग्रंथों में **वामन, विश्वनाथ** आदि ने विशेष रूप से उद्धृत किया है। कवि ने **वेणीसंहार** की प्रस्तावना में अपने आप को **"मृगराजलक्ष्मा"** कहा है । इससे ज्ञात होता है कि इन्हें **'कविंद्र' या 'कविमृगेंद्र'** कहा जाता था।

- **समय** - सातवीं आठवीं शताब्दी।
- **कृति**- वेणीसंहार एकमात्र नाटक (6अं
- **उपाधि**- मृगराज, कविमृगेंद्र, कविंद्र ।

unacademy

13. विल्हण

बिल्हण कश्मीर के प्रसिद्ध कवि थे । इनका समय **ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध** माना जाता है। जिनकी रचना **चौरपंचाशिका** प्रसिद्ध है। उनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना **विक्रमांकदेवचरितम्** है जो इतिहास ग्रन्थ है। बिल्हण के **विक्रमांकदेवचरितम्** में कल्याण के चालुक्य राजा **विक्रमादित्यपंचम्** (1076-1127) के पराक्रमों का वृत्तांत है।

विल्हण का सामान्य परिचय-

- **पिता-** जेष्ठकलश
- **पितामह-** राजकलश
- **माता-** नागदेवी
- **जन्म स्थान-** कश्मीर (खौनमुख गांव)

कृतियां -

1. विक्रमाङ्कदेवचरितम् (18 सर्ग),
2. कर्णसुंदरी,
3. चौरपञ्चाशिका,
4. सूक्तिमुक्तावली,
5. सुभाषितावली,

उपाधि- विद्यापति ।

unacademy

14. श्रीहर्ष

श्रीहर्ष की गिनती प्रसिद्ध कवियों में होती है। इनका समय 12वीं **शताब्दी का उत्तरार्ध** है। वह बनारस एवं कन्नौज के **गहड़वाल शासकों, विजयचन्द्र एवं जयचन्द्र** की राजसभा को सुशोभित करते थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की, जिनमें **'नैषधचरितम्'** महाकाव्य उनकी कीर्ति का स्थायी स्मारक है। **अलंकृत शैली** के सर्वश्रेष्ठ कवि श्रीहर्ष में उच्चकोटि की काव्यात्मक प्रतिभा थी तथा वे अलंकृत शैली के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। श्रीहर्ष महान् कवि होने के साथ-साथ बड़े दार्शनिक भी थे। **'खण्डन-खण्ड-खाद्य'** नामक ग्रन्थ में उन्होंने अद्वैत मत का प्रतिपादन किया। इसमें न्याय के सिद्धान्तों का भी खण्डन किया गया है। व्यूलर के अनुसार हर्ष का निर्विवाद समय 12 वीं शताब्दी उत्तरार्ध है ।

जीवन चरित्र-

कन्नौज के राजा जयचंद्र उनके आश्रय दाता थे । इन्होनें चिंतामणि जप के फलस्वरुप सिद्धि और विद्वत्ता प्राप्त की । इनके द्वारा रचित ग्रन्थ बृहत्त्रयी का सर्वोत्कृष्ट रत्न **नैषधीयचरितम्** 22 सर्गात्मक है । श्रीहर्ष के काव्य में भाषा सौंदर्य, भाव सौष्ठव और पदलालित्य है ।

श्रीहर्ष का सामान्य परिचय-

- **समय** – 12 शताब्दी उत्तरार्ध
- **पिता**- श्रीहीर,
- **माता**- मामल्ल देवी,

  "श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्" – (नैषध.1.145)
- **निवास**- कन्नौज

कृतियाँ- 1. स्थैर्यविचारप्रकरण, 2. श्रीविजयप्रशस्ति, 3. छिंदप्रशस्ति, 4. खंडनखंडखाद्य, 5. शिवशक्तिसिद्धि, 7. नैषधीयचरितम्, 8. अर्णव वर्णन, 9. गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति

15. अंबिकादत्तव्यास



अम्बिकादत्तव्यास ब्रजभाषा के कुशल और सरस कवि थे। इनका समय 1858-1900 ई. माना जाता है। ये 'भारतेन्दु युग' के कवि और लेखक थे। ये भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समकालीन तथा उनसे प्रभावित हिन्दी सेवी साहित्यकार थे। 12 वर्ष की अवस्था में **'काशी कविता वर्धिनी सभा'** ने 'सुकवि' की उपाधि से इन्हें सम्मानित किया था। अम्बिकादत्त व्यास की प्रशंसा भारतेन्दु ने **'कविवचन सुधा'** में भूरि-भूरि की है। ये विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इन्हें **हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बांग्ला, दर्शन, न्याय, वेदान्त** में महारथ हासिल थी। इन्होंने गद्य और पद्य में 50 से अधिक पुस्तकें लिखी थीं। व्यास जी का आश्चर्यजनक वृत्तांत अपने समय में **'फन्तासी'** उपन्यास था। **शिवराजविजय** इनका महत्वपूर्ण संस्कृत उपन्यास है।

काशी से **'वैष्णव-पत्रिका'** (1884 ई.) का आरम्भ इन्होंने किया था, जो बाद में **'पीयूष-प्रवाह'** नाम से साहित्यिक पत्रिका में रूपांतरित हो गयी। **कवित्त और सवैया शैली** में इनकी ब्रजभाषा की अनेक रचनाएँ लोकप्रिय

unacademy

अबिकादत्तव्यास का सामान्य परिचय-

- **समय** - 1858-1900 ई.
- **पिता**- दुर्गादत्त
- **पितामह** – पं राजाराम
- **चाचा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान**- जयपुर राजस्थान
- **कर्मस्थली** – काशी
- **पत्रिका** – पीयूष प्रवाह का सम्पादन

अम्बिकादत्तव्यास के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- अम्बिकादत्तव्यास प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता हैं।
- बिहार में **'संस्कृत सञ्जीवनी समाज'** की स्थापना की।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **घटिकाशतक** का उपाधि दी गई थी।
- सौ प्रश्नों को एकसाथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **शतावधान** की उपाधि दी गई थी।

unacademy

कृतियाँ-

इन्होंने हिंदी तथा संस्कृत में छोटी-बड़ी 78 पुस्तकें लिखी ।

उपन्यास-

1. शिवराजविजयम् (3) विराम, प्रत्येक विराम में चार निश्वास।
2. गद्यकाव्यमीमांसा
3. अवतारमीमांसाकारिका
4. कथाकुसुम
5. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्
6. सहस्रनामरामायणम्
7. मित्रलाभ
8. दुःखद्रुमकुठार

नाटक- 9. सामवतम् ।

उपाधि-

1. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
2. सुकवि
3. शतावधान
4. अभिनवबाण/आधुनिकबाण
5. भारतरत्न (काशी की महासभा)
6. भारतभूषण
7. महाकवि

unacademy

16. पंडिता क्षमाराव

पण्डिता क्षमाराव (4 जुलाई 1890 - 22 अप्रैल 1954) एक संस्कृत विदुषी थीं जिन्होंने संस्कृत साहित्य में नूतन विधाओं तथा विषयवस्तु का अवतरण किया। वे गार्गी एवं मैत्रेयी की परम्परा को आगे बढाने वाली संस्कृत कवयित्री हैं। उन्होंने कथाओं को भी पद्य में लिखा। चरितकाव्य के अन्तर्गत उन्होंने तुकारामचरित, रामदासचरित तथा ज्ञानेश्वरचरित का ग्रथन किया। गांधी जी के सत्याग्रह से प्रभावित होकर उन्होंने **'सत्याग्रहगीता'** नामक महाकाव्य की रचना की जो 1932 में पेरिस से प्रकाशित हुआ। अपने पिता की जीवनी लेखन से पण्डिता क्षमाराव ने संस्कृत साहित्य में नई विधा का सूत्रपात किया। दुर्भाग्य से तीन वर्ष की अल्प आयु में ही उनको पितृ-वियोग सहना पड़ा। पिता की मृत्यु के पश्चात् क्षमा का बचपन अपनी चाची के घर घोर कष्टों और अभावों में बीता। प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी मेधाविनी क्षमा 10 वर्ष की आयु से ही संस्कृत और अंग्रेजी में कविताएं लिखने लगी थी।

unacademy

20 वर्ष की आयु में उनका विवाह प्रसिद्ध चिकित्सक **डॉ. राघवेन्द्र राव** के साथ हो गया। 1911 में पति के साथ यूरोप-भ्रमण के दौरान उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का अभ्यास किया, पाश्चात्य संगीत, पियानो-वादन और टेनिस में प्रवीणता प्राप्त की। यूरोप की संस्कृति को निकट से जानकर अंग्रेजी भाषा में उत्तम साहित्य की रचना की। वे यूरोप के अनेक विद्वानों और साहित्यकारों के सम्पर्क में आईं।

पंडिता क्षमाराव सामान्य परिचय -

- समय- (1890 – 1954)
- माता- उषा देवी,
- पिता- शंकर पांडुरंग (संस्कृत के विद्वान और बाल्यावस्था में निधन)
- भाषा- प्रसादमयी,
- पति- डॉ राघवेंद्रराव,
- गुरु- विद्यालंकार पंडित नगण्य
- उपाधि- पंडिता
- क्षमाराव ने छोटी-बड़ी 50 पुस्तकें लिखी जिसमें सात एकांकी चार तीन अंक वाले नाटक चार पद्य जीवन चरित्र 35 लघु कथाएं तथा विविध निबंध ग्रंथ हैं ।

कृतियाँ-

- ❖ काव्यात्मक रचनाएं-
  1. कथा पंचक (पद्यबंध)
  2. ग्राम ज्योति
  3. कथा मुक्तावली
- ❖ खंडकाव्य- मीरा लहरी
- ❖ महाकाव्य - 1. तुकारामचरित 2. रामदासचरितम 3. विज्ञानेश्वर चरित 4. सत्याग्रह गीता 5. उत्तर सत्याग्रह गीत गांधी चरित्र इत्यादि भी इनकी रचनाएं हैं । स्वराजविजयम् (45) अध्याय में गांधी की संपूर्ण जीवन माया के साथ स्वतंत्र इतिहास वर्णन है।

unacademy

17. वी. राघवन (वेंकटराम राघव)

वी. राघवन संस्कृत के विद्वान तथा संगीतज्ञ थे । इनका समय 1908-1979 है।

इन्हें **पद्मभूषण** और संस्कृत के लिए **साहित्य अकादमी पुरस्कार** सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुऐ हैं । ये 120 से अधिक पुस्तकों तथा 1200 लेखों के लेखक थे इन्होंने संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र पर किताबें लिखी । इन्होंने संस्कृत काव्य के बड़े जाने-माने काव्य भोज के अंग का संपादन और अनुवाद किया । 1996 इन्हें **जवाहरलाल फेलोशिप** से सम्मानित किया गया । रविंद्र नाथ टैगोर का पहला नाटक **वाल्मीकि प्रतिभा** का इन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया ।

कृतियाँ-

- **नाटक-** अभिनव सुंदरी, महाश्वेता, रासलीला, विकट नितंब लक्ष्मी स्वयंवरम्, अनारकली ।
- **महाकाव्य-** श्री मुत्तुस्वामीदीक्षित चरितम् ।
- **लघुकाव्य-** 1. पैशुन्य 2. महात्मा 3. फाल्गुन 4. कर्मयो 5. मध्याह्न 6. उषा 7. प्रतीक्षा
- **संस्कृत की अन्य कृतियां-**
  संस्कृत रविंद्रम्, वाल्मीकि प्रतिभा, नटीर पूजा,
- **अन्य-** अभिनव गुप्त एवं उनके कार्य, श्रृंगार मंजरी, पला मनदाना (प्रहसन), अलंकार शास्त्र विरुपहा का चो चंपू ।
- **स्तोत्र काव्य-** श्री कामाक्षीमातृका स्तोत्र, श्री मीनाक्षीसुप्रभात

18. श्रीधरभास्कर वर्णेकर



श्रीधरभास्कर वर्णेकर का जन्म 31 जुलाई 1918 महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ । कांची पीठ के शंकराचार्य ने प्रज्ञा भारती की उपाधि से इनको विभूषित किया इन्होंने **अर्वाचीन संस्कृत साहित्य** नाम से मराठी में शोध प्रबंध लिखा और **संस्कृत भवितव्यम्** पत्रिका का संपादन किया इन्हें **रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी** सम्मान भी मिला ।

❖ **पुरस्कार**

- साहित्य अकादमी पुरस्कार-1974
- राष्ट्रपति पुरस्कार, सरस्वती पुरस्कार

कालिदास सम्मान ।

उपाधि- प्रज्ञा भारती ।

कृतियाँ-

❖ **लघु काव्य-** श्रमगीता 118 पद्य ।

❖ इनका छत्रपति शिवाजी के चरित्र पर निर्मित महाकाव्य श्री शिवराज्योदय (68) सर्गात्मक है ।

❖ वात्सल्यरसायनम् इस काव्य का दूसरा नाम (श्रीकृष्णबाललीला शतकम्) है ।

❖ संस्कृतवाङ्मय कोश ।

❖ भारतरत्नशतकम् ।

❖ स्वातन्त्र्यवीरशतकम् ।

unacademy

1. काव्यलक्षणविचारे "स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्" इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य
(B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य
(D) व्यक्तिविवेककारस्य

2. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?

(A) रौद्रः
(B) वीरः
(C) भयानकः
(D) बीभत्सः

3. जतुकर्णीपुत्रः भवति-

(A) भवभूतिः
(B) कालिदासः
(C) माघः
(D) श्रीहर्षः

unacademy

4. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) सर्वदमनः

(C) गौतमः (D) वातायनः

5. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति-

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः

(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

6. "दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्" - दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः ?

(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (B) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे

(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे (D) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

unacademy

10. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति -

(A) द्रोणपर्व (B) भीष्मपर्व

(C) युधिष्ठिरपर्व (D) शल्यपर्व

11. महाभारताश्रितं न भवति-

(A) वेणीसंहारम् (B) दूतवाक्यम्

(C) मध्यमव्यायोगः (D) अभिषेकनाटकम्

12. 'ज्ञानविज्ञानयोगः' श्रीमद्भगवद्गीतायाः कतमोऽध्यायः-

(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः

(C) पञ्चमोऽध्यायः (D) सप्तमोऽध्यायः

13. एषु कस्य महापुराणेषु अन्तर्भावो नास्ति-

(A) मत्स्यपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य

(C) अग्निपुराणस्य (D) साम्बपुराणस्य

15. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(अ) उत्तररामचरितम्	(i) भासः
(ब) बुद्धचरितम्	(ii) भवभूतिः
(स) वेणीसंहारम्	(iii) भट्टनारायणः
(द) स्वप्नवासवदत्तम्	(iv) अश्वघोषः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

16. सर्वदमनस्य अपरं नाम किम् आसीत् ?

(A) रोहितः (B) नागार्जुनः

(C) भरतः (D) गौतमः

unacademy

धन्यवाद

कवि परिचय

(क) प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय-

1. भास



भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे, जिनके जीवनकाल के विषय में अधिक जानकारी नहीं है। भास का समय **100 ई.पू. से 200 ई.** के बीच का माना गया है। **'स्वप्नवासवदत्तम्'** उनके द्वारा लिखित सबसे चर्चित नाटक है, जिसमें एक राजा के अपने रानी के प्रति प्रेम और पुनर्मिलन की कहानी है। कालिदास जो गुप्तकालीन समझे जाते हैं, ने भास का नाम अपने नाटक में लिया है, जिससे लगता है कि वह गुप्त काल से पहले रहे होंगे पर इससे भी उनके जीवनकाल का अधिक ठोस प्रमाण नहीं मिलता। आज कई नाटकों में उनका नाम लेखक के रूप में उल्लिखित है, किन्तु **1912 में त्रिवेंद्रम में टी. गणपति शास्त्री** ने नाटकों की लेखन शैली में समानता देखकर उन्हें भास-लिखित बताया। संस्कृत नाटककारों में 'भास' का नाम उल्लेखनीय है। भास कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। सबसे पहले **'टी. गणपति शास्त्री'** ने भास के तेरह नाटकों की खोज की थी। अभी तक भास के विषय में जो सामग्री मिलती है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि भास ही लौकिक संस्कृत के प्रथम साहित्यकार थे। भास का आविर्भाव **ई. पू. पाँचवी - चौथी** शती में हुआ था। नाटककार भास के कुल 13 नाटकों की खोजें हैं

unacademy

भास का सामान्य परिचय-

- समय - ई. पू. चौथी शताब्दी ('टी. गणपति शास्त्री' के अनुसार)
  300 ई.(ए.बी.कीथ के अनुसार)
- उपाधि- कविताकामिनीहास, अग्निमित्र (ज्वलनमित्र), भासो हास।
- रचनाएं - 13

कृतियाँ-

1. **लोककथा पर आधारित रुपक** - प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम् अविमारकम्, चारुदत्तम् ।
2. **रामायणाश्रित रुपक -** प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक ।
3. **महाभारत मूलक-** ऊरुभंगम्, दूतवाक्यम्, पंचरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभारम् ।
4. **श्रीकृष्ण कथा पर आधारित रुपक** – बालचरितम्।

unacademy

2. अश्वघोष



अश्वघोष, बौद्ध महाकवि तथा दार्शनिक थे। **बुद्धचरितम्** इनकी प्रसिद्ध रचना है। **कुषाणनरेश कनिष्क** के समकालीन महाकवि अश्वघोष का **समय प्रथम शताब्दी ई.** का अन्त और द्वितीय का आरम्भ है।

जीवन वृत्त- उनका जन्म **साकेत (अयोध्या)** में हुआ था। उनकी **माता** का नाम **सुवर्णाक्षी** था। चीनी परम्परा के अनुसार महाराज **कनिष्क पाटलिपुत्र** के अधिपति को परास्त कर वहाँ से अश्वघोष को अपनी राजधानी **पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर)** ले गए थे। कनिष्क द्वारा बुलाई गई **चतुर्थ बौद्ध संगीति** की अध्यक्षता का गौरव एक परम्परा **महास्थविर पार्श्व** को और दूसरी परम्परा महावादी अश्वघोष को प्रदान करती है। ये **सर्वास्तिवादी बौद्ध** आचार्य थे जिसका संकेत **सर्वास्तिवादी "विभाषा"** की रचना में प्रायोजक होने से भी हमें मिलता है। ये प्रथमतः परमत को परास्त करनेवाले **"महावादी"** दार्शनिक थे। इसके अतिरिक्त साधारण जनता को बौद्धधर्म के प्रति **"काव्योपचार"** से आकृष्ट करनेवाले महाकवि थे।

unacademy

अश्वघोष का सामान्य परिचय-

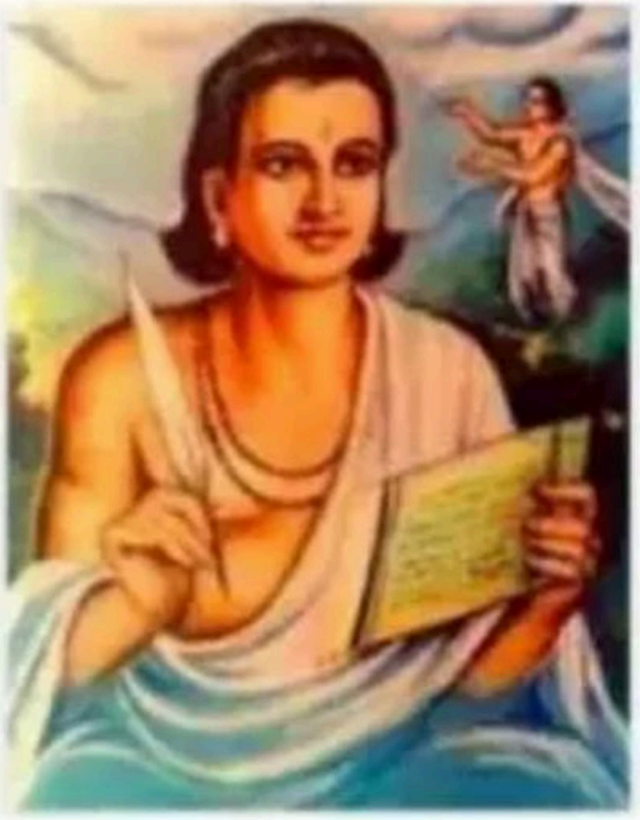
- समय – प्रथम शताब्दी ई.
- जन्म – साकेत (अयोध्या)
- माता – सुवर्णाक्षी
- उपाधि- आर्यभदन्त, बौद्धभिक्षु, राष्ट्रपाल ।
- रीति- वैदर्भी

कृतियाँ-

- महाकाव्य- बुद्धचरितम्, सौन्दरानन्द ।
- नाटक- शारिपुत्रप्रकरणम् ।
- सुजुकी के अनुसार इनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ – पञ्चशिखा, सूत्रालङ्कारशास्त्र,महायानश्रद्धोत्पादसङ्ग्रह, महायानश्रद्धोत्पादसास्त्र, महायानभूमि गुह्यवाङ्मूल, दशशतकमार्गसूत्र ।

unacademy

3. महाकवि कालिदास



कालिदास (100 ई.पू.) संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं । कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें **राष्ट्रीय कवि** का स्थान तक देते हैं।

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। **मेघदूतम्** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की **कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति** अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है ।

रीति- कालिदास **वैदर्भी रीति** के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने अपने श्रृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

समय- कालिदास किस काल में हुए और वे मूलतः किस स्थान के थे इसमें काफ़ी विवाद है। चूँकि, कालिदास ने द्वितीय शुंग शासक **अग्निमित्र** को नायक बनाकर **मालविकाग्निमित्रम्** नाटक लिखा और **अग्निमित्र** ने 170 ईसापूर्व में शासन किया था, अतः कालिदास के समय की एक सीमा निर्धारित हो जाती है कि वे इससे पहले नहीं हो सकते। छठीं सदी ईसवी में **बाणभट्ट** ने अपनी रचना **हर्षचरितम्** में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के एहोल शिलालेख में कालिदास का वर्णन है अतः वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस प्रकार कालिदास के

unacademy

दुर्भाग्यवश इस समय सीमा के अन्दर वे कब हुए इस पर काफ़ी मतभेद हैं। विद्वानों में (i) द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का मत (ii) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत (iii) तृतीय शताब्दी ईसवी का मत (iv) चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत (v) पाँचवी शताब्दी ईसवी का मत, तथा (vi) छठीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का मत प्रचलित थे। इनमें ज्यादातर खण्डित हो चुके हैं या उन्हें मानने वाले कुछ लोग ही हैं किन्तु मुख्य संघर्ष 'प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत और 'चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत' में है।

वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया। **विक्रमोर्वशीयम्** के नायक पुरुरवा के नाम का विक्रम में परिवर्तन से इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदास उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के राजदरबारी कवि थे। इन्हें **विक्रमादित्य के नवरत्नों** में से एक माना जाता है।

कालिदास के अस्तित्व के कुछ साक्ष्य **बिहार के मधुबनी** जिला में भी मिलते हैं। कहा जाता है विद्योत्तमा (कालिदास की पत्नी) से शास्त्रार्थ में पराजय के बाद कालिदास यहीं गुरुकुल में रुके। कालिदास को यहीं ज्ञान का वरदान मिला। यहां आज भी कालिदास का डीह है। यहाँ की मिट्टी से बच्चों के प्रथम अक्षर लिखने की परंपरा आज भी यहाँ प्रचलित है। कुछ विद्वानों ने तो उन्हें बंगाल और उड़ीसा का भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहते हैं कि कालिदास की श्रीलंका में हत्या कर दी गई थी लेकिन विद्वान इसे भी कपोल-कल्पित मानते हैं।

कालिदास का सामान्य परिचय-

- **समय** – प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व ।
- **जन्मस्थान** – उज्जयिनी (काश्मीरी/बंगाली)
- **रीति एवं गुण** – वैदर्भी तथा प्रसाद
- **प्रधानरस** – श्रृंगार
- **प्रिय छन्द** – उपजाति/अनुष्टुप
- **प्रिय अलंकार** – उपमा
- **प्रिय रस** – श्रृंगार
- **पत्नी** – विद्योतमा
- **श्वसुर** – शारदानन्द
- **आश्रयदाता** – चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
- **जाति/गोत्र**- ब्राह्मण
- **उपासक** – शिव के
- **रचनाकाल** – 150 ई. पू. के पश्चात् तथा 600 ई. के पहले

unacademy

कालिदास के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- कालिदास ने काली देवी की उपासना से विद्या की प्राप्ति की।
- विद्याप्राप्ति के बाद कालिदास का कथन –
  'अनावृतकपाटं द्वारं देहि'
- इसके उत्तर में पत्नी विद्योतमा का कथन –
  'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः'
- इन तीन पदों से कालिदास ने तीन काव्यों की रचना की –
- अस्ति से – **'कुमारसम्भवम्'** – अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा..
- कश्चित् से – **'मेघदूतम्'** – कश्चित् कान्ता विरहगुरुणा...
- वाग् से – **'रघुवंशम्'** – वागर्थाविव सम्पृक्तौ...
- राजा विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्न थे जिनमें से एक कालिदास भी थे –

unacademy

4. शूद्रक



शूद्रक गुप्तकाल में उत्पन्न हुए । उनका प्रसिद्ध नाटक **'मृच्छकटिकम्'** है, जिसे सामाजिक नाटकों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें दस अङ्क हैं। इनका रचनाकाल तीसरी चौथी शताब्दी ई. माना जाता है। इसके दस अंकों में ब्राह्मण **'चारुदत्त'** जो समय-चक्र से निर्धन है तथा उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका **'वसंतसेना'** के आर्दश प्रेम की कहानी वर्णित है।

unacademy

भाषा शैली- मृच्छकटिकम् की शैली सरल तथा वर्णन विस्तृत है। प्राकृत भाषा की सभी शैलियों का प्रयोग इसमें एक साथ मिलता है। प्रथम बार संस्कृत में शूद्रक ने ही राज परिवार को छोड़कर समाज के मध्यम वर्ग के लोगों को अपने नाटक के पात्र बनाये। इसके कथानक तथा वातावरण में स्वाभाविकता है । इस दृष्टि से शूद्रक की नाट्य कला बड़ी प्रशंसनीय है। पाश्चात्य आलोचकों ने इसकी बड़ी सराहना की है तथा **मृच्छकटिकम्** को सार्वभौम आकर्षण का नाटक बताया है, जिसका सफल मंचन विश्व में कहीं भी किया जा सकता है। इनके विषय में प्रसिद्ध उक्ति है (**शूद्रकः अग्निं प्रविष्टः**) अर्थात् शूद्रक राजा अग्नि में प्रविष्ट हुए ।

unacademy

शूद्रक का सामान्य परिचय-

- **समय** - तीसरी चौथी शताब्दी ईसवी।
- **कृति** - मृच्छकटिकम् ।
- शूद्रक ने 110 वर्ष वर्षों की आयु व्यतीत की थी।
- शूद्रक बड़े विद्वान और शक्तिशाली योद्धा थे।
- शूद्रक ने **अश्वमेध** याग किया था।
- शूद्रक ने अपने पुत्र का राज्याभिषेक करके अग्नि में प्रवेश किया-

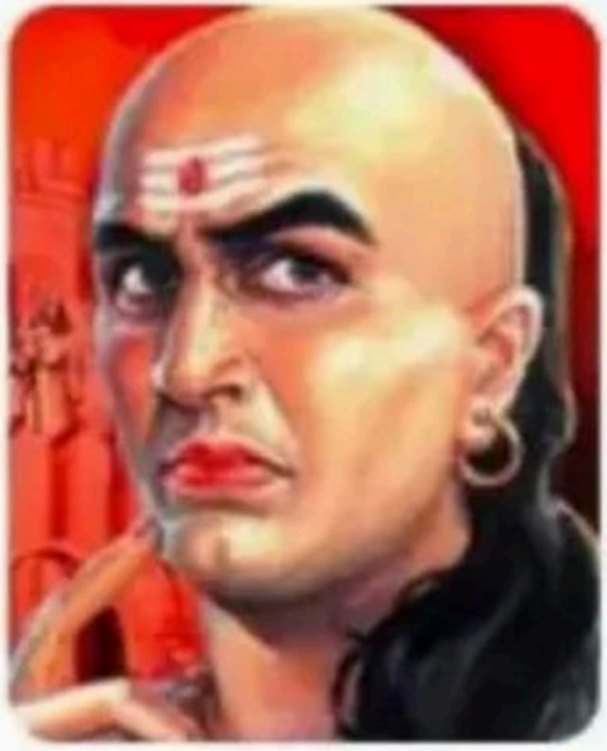
  लब्ध्वा चायुः शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्रविष्टः -

  (मृच्छकटिकम्)

unacademy

5. विशाखदत्त

विशाखदत्त गुप्तकाल की विभूति थे। विशाखदत्त **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य** के आश्रित सामंत थे। इनका समय **पाँचवी छठी शताब्दी ई.** है। इनके दो नाटक प्रसिद्ध हैं- **मुद्राराक्षस** तथा **देवीचन्द्रगुप्तम्**। मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्तमौर्य के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख मिलता है। **देवीचन्द्रगुप्तम्** से गुप्तवंशी शासक रामगुप्त के विषय में सूचनाएँ प्राप्त होती है। यह नाटक अपने मूल रूप में नहीं मिलता। इसके कुछ अंश **'नाट्य दर्पण'** में प्राप्त होते हैं। **विशाखदत्त** ऐतिहासिक प्रवृत्ति के लेखक हैं। इनके नाटक **वीर रस** प्रधान हैं। मुद्राराक्षस में **प्रेमकथा, नायिका, विदूषक** आदि का अभाव है तथा इस दृष्टि से यह संस्कृत साहित्य में अपना अलग स्थान रखता है।



unacademy

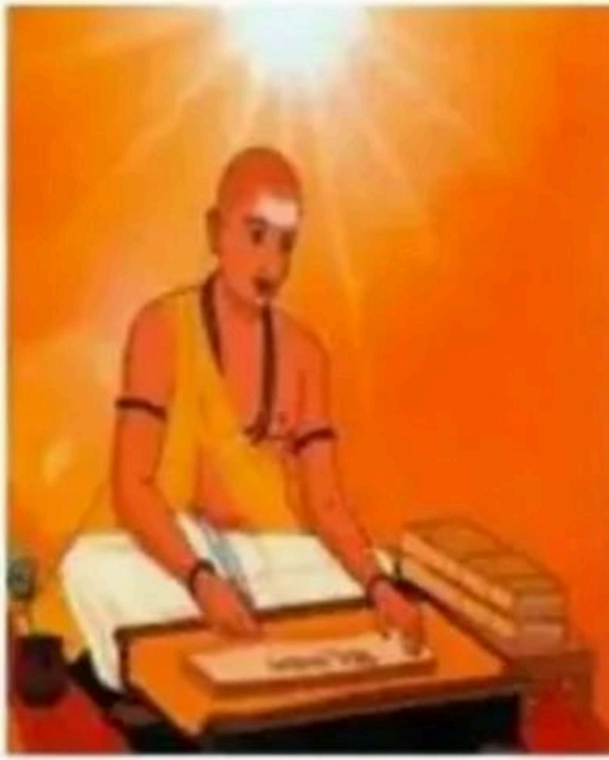
विशाखदत्त का सामान्य परिचय-

- **समय** – पांचवी छठी शताब्दी ई.
- **स्थान** – पाटलपुत्र (संभावित)
- **पिता**- महाराज पृथु(परन्तु कुछ संस्करण में पिता का नाम भास्कर दत्त भी प्राप्त होता है)।
- **पितामह**- सामंत वटेश्वरदत्त
- **प्रधानरस** - वीर
- **उपाधि**- दत्त (वटेश्वरदत्त, भास्करदत्त, विशाखदत्त)

कृतियाँ-

2. मुद्राराक्षस
2. देवीचन्द्रगुप्तम्
3. अभिसारवञ्चितकम्
4. राघवानंद।

6. भारवि



भारवि संस्कृत के महान कवि हैं। वे अर्थ की गौरवता के लिये प्रसिद्ध हैं **"भारवेरर्थगौरवम्"**। **किरातार्जुनीयम्** महाकाव्य उनकी महान रचना है। इसे एक उत्कृष्ट श्रेणी की काव्यरचना माना जाता है। इनका काल **छठी-सातवीं शताब्दी (560 ई. से 615 के बीच)** बताया जाता है। **भारवि** सम्भवतः **दक्षिण भारत** के कहीं जन्मे थे। उनका रचनाकाल पश्चिमी **गंग राजवंश** के राजा दुर्विनीत तथा पल्लव राजवंश के राजा **सिंहविष्णु** के शासनकाल के समय का है। कवि ने बड़े से बड़े अर्थ को थोड़े से शब्दों में प्रकट कर अपनी काव्य-कुशलता का परिचय दिया है। भारवि ने केवल **एक अक्षर** "न" वाला श्लोक लिखकर अपनी काव्यचातुरी का परिचय दिया है। एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।

भारवि का सामान्य परिचय-

- **समय** - 560 ई. से 615 के मध्य
- **माता**- सुशीला
- **पिता**- श्रीधर (अवंतीसुंदरी कथा के अनुसार नारायणस्वामी)
- **पुत्र**- मनोरथ
- **गोत्र** - कुशिक
- **पत्नी**- रसिकवती (रासिका)
- **सम्प्रदाय** - शैव
- **निवासी**- 1. अचलपुर (दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश में)
  2. धारानगरी (अवंतीसुंदरी कथा के अनुसार)

भारवि के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- **वास्तविक नाम**- (दामोदर) भारवि इनकी उपाधि थी
- **भारवि का वंशवृक्ष**

श्रीधर (पिता)
|
भारवि
|
मनोरथ (पुत्र)
|
वीरदत्त-गौरी (पौत्र)
|
दण्डी (प्रपौत्र)

आश्रयदाता - 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज),

2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार),

3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)

भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।

भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या 'रीतिशैली' के जन्मदाता है, इनके काव्यमार्ग को विचित्रमार्ग कहते हैं।

श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को 'ट्रावनकोर' का निवासी सिद्ध करते हैं।

भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।

आचार्य 'मल्लिनाथ' ने भारवि के **'किरातार्जुनीयम्'** पर 'घण्टापथ' नाम की टीका लिखी है।

- मल्लिनाथ भारवि के काव्य की उपमा 'नारिकेलफल' से क
  हैं- **'नारिकेलफलसम्मितं वचः'**।
- दक्षिण के **'एहोल शिलालेख'** में भारवि का नाम उल्लिखित
- भारवि किरातार्जुनीयम् को **'लक्ष्म्यन्त'** महाकाव्य, माघ
  शिशुपालवधम् को **'श्रयन्त'** महाकाव्य तथा श्रीहर्ष
  नैषधीयचरितम् को **'आनन्दान्त'** महाकाव्य कहते हैं।

7. माघ

माघ का समय 675 ई. के लगभग 7 वीं शताब्दी का अंतिम चरण है। माघ मारवाड़ के प्राचीनतम महाकाव्य 'शिशुपालवध' के रचियता थे। माघ के दादा 'सुप्रभदेव' 'वर्मलात' नामक राजा के प्रधान मन्त्री थे। 'माघ' का जन्म भीन-माल के एक प्रतिष्ठित धनी श्रीमाली ब्राह्मण-कुल में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम विद्यावती था। वे सर्वश्रेष्ठ संस्कृतमहाकवियों की त्रयी (माघ, भारवि, कालिदास) में अन्यतम हैं। उन्होंने शिशुपालवध नामक केवल एक ही महाकाव्य लिखा। इस महाकाव्य में श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चेदिनरेश शिशुपाल के वध का सांगोपांग वर्णन है। उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य - इन तीन गुणों का सुभग सह-अस्तित्व माघ के कमनीय काव्य में मिलता है, अतः उनके बारे में "माघे सन्ति त्रयो गुणाः" यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। इनके पिता का नाम दत्तक था और माता का नाम ब्राह्मी था। माघ की प्रशंसा में कहा गया है



unacademy

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः" ॥

कालिदास उपमा में, भारवि अर्थगौरव में, और दण्डी पदलालित्य में बेजोड़ हैं। लेकिन माघ में ये तीनों गुण हैं। शिशुपालवध मे रैवतक पर्वत की हाथी से और हाथी के बंधे घंटे की तुलना नही बल्कि रैवतक पर्वत के दोनो ओर जो सूर्य और चन्द्रमा है उसकी उपमा स्वर्ण और रजत से निर्मित घंटे से की गई है अतः माघ को घंटा माघ कहा जाता है।

माघ का सामान्य परिचय-

- समय- 675 ई.
- पिता- दत्तक
- माता – ब्राह्मी
- जन्मस्थान- भीन-माल (गुजरात)

उपाधि- घंटा माघ,

कृति- 'शिशुपालवधम्'।

unacademy

8. हर्ष



हर्षवर्धन प्राचीन भारत में एक राजा था जिसने उत्तरी भारत में अपना एक सुदृढ़ साम्राज्य स्थापित किया था। इनका समय **सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध** माना जाता है। वह अंतिम हिंदू सम्राट् था जिसने पंजाब छोड़कर शेष समस्त उत्तरी भारत पर राज्य किया। शशांक की मृत्यु के उपरांत वह बंगाल को भी जीतने में समर्थ हुआ। हर्षवर्धन के शासनकाल का इतिहास मगध से प्राप्त दो ताम्रपत्रों, राजतरंगिणी, चीनी यात्री ह्वेनसाँग के विवरण और हर्ष एवं बाणभट्ट रचित संस्कृत काव्य ग्रंथों में प्राप्त है।

कृतियाँ- प्रियदर्शिका- 4 अंक,
रत्नावली- 4 अंक,
नागानन्द- 5 अंक,

उपाधि- अनङ्ग, राजा, कवीन्द्र, कविता का हर्ष ।

हर्ष का सामान्य परिचय-

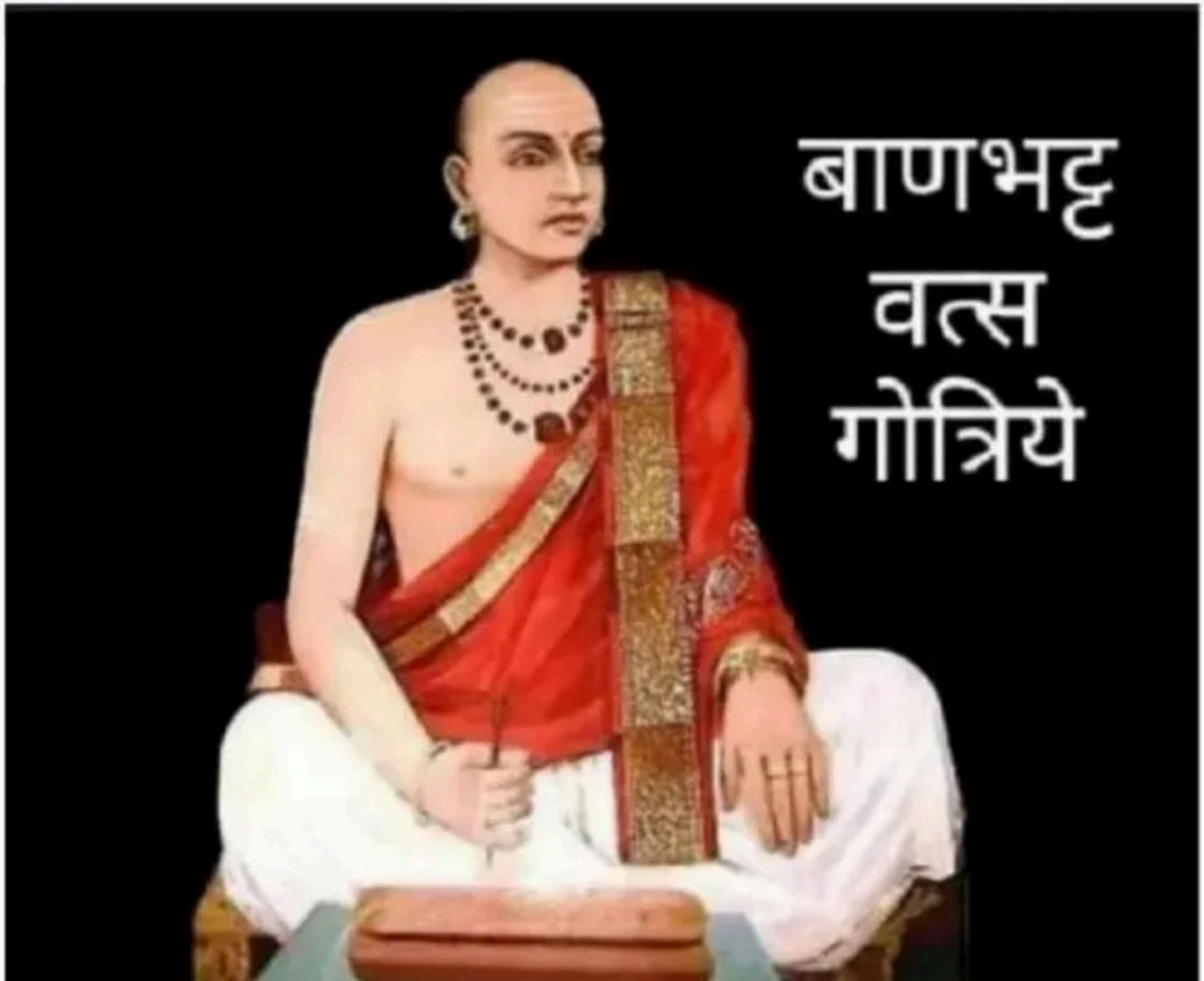
- समय - सातवीं शताब्दी पूर्वार्ध
- पिता- प्रभाकरवर्धन,
- बड़ा भाई- राज्यवर्धन,
- बहन- राज्यश्री,
- निवास- स्थाणीश्वर,
- इन्होंने अवन्तिवर्मा के साथ मिलकर 562 ई. में हूणों को पर
  किया।
- ये प्रभाकरवर्धन के तीन पुत्रों में अद्वितीय थे ।
- ह्वेनसांग की कृति 'सी यू की' में हर्ष के विषय में विस्तृत व
  मिलता है ।

unacademy

9. बाणभट्ट

बाणभट्ट संस्कृत साहित्य में ही एक ऐसे महाकवि हैं जिनके जीवन चरित के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। **'बाण भट्ट सातवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध** के संस्कृत गद्य लेखक और कवि थे। वह राजा **हर्षवर्धन** के आस्थान कवि थे। इनकी बाल्यावस्था में माता की मृत्यु और 14 वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु हो गई थी । उनके दो प्रमुख ग्रंथ हैं: **हर्षचरितम्** तथा **कादम्बरी**। **हर्षचरितम्** राजा हर्षवर्धन का जीवन-चरित्र था और कादंबरी दुनिया का पहला **उपन्यास** था। राजा हर्ष ने इनको **"महानयं भुजंग"** (बहुत चरित्रभ्रष्ट) कहा था । कादंबरी पूर्ण होने से पहले ही **बाणभट्ट** जी का देहांत हो गया तो उपन्यास पूरा करने का काम उनके पुत्र **भूषण भट्ट** ने अपने हाथ में लिया। दोनों ग्रंथ संस्कृत साहित्य के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते है।

unacademy



unacademy

यद्यपि बाणभट्ट की लेखनी से अनेक ग्रन्थ रत्नों का लेखन हुआ है किन्तु बाणभट्ट का महाकवित्व केवल **'हर्षचरित'** और **'कादम्बरी'** पर प्रधानतया आश्रित है। इन दोनों गद्य काव्यों के अतिरिक्त **मुकुटताडिका** (नाटक), **चण्डीशतकम्** और **पार्वती-परिणय** (नाटक) भी बाणभट्ट की रचनाओं में परिगणित हैं। इनमें **'पार्वतीपरिणय'** को **ए.बी. कीथ** ने बाणभट्ट की रचना न मानकर उसे **वामनभट्टबाण** (17 वीं शती) नामक किसी **दाक्षिणात्य वत्सगोत्रीय ब्राह्मण** की रचना माना है। गोवर्धनाचार्य का कथन है- **'वाणी बाणो बभूव'**।

बाणभट्ट का सामान्य परिचय-

- समय- चीनी यात्री ह्वेनसांग (629- 645) के लगभग ।
- पिता- चित्रभानु
- पितामह - अर्थपति
- माता- राजदेवी
- पुत्र- भूषणभट्ट (पुलिन या पुलिन्दभट्ट)
- बहन – मालती
- बाण के भाई – चित्रसेन तथा मित्रसेन
- वंश\गोत्र – वत्स वंश\वात्स्यायन
- उपासक – शैव
- रीति - पाञ्चाली
- निवास- प्रीतिकूट (शोण नदी के दक्षिण तट पर)
- शैली पांचाली

बाणभट्ट का वंशवृक्ष -

वत्स → कुबेर → पाशुपत → अर्थपति → चित्रभानु → बाणभट्ट

बाणभट्ट की उपाधि/प्रशस्तियाँ-

पञ्चबाणस्तु बाणः	–	जयदेव
कविताकामिनीकौतुक	–	जयदेव

कविताकाननकेसरी	–	चन्द्रदेव
वश्यवाणी चक्रवर्ती	–	हर्षवर्धन
बाणस्तु पञ्चाननः	–	श्रीचन्द्रदेव
गद्यसम्राट्	-	बलदेव उपाध्याय
वाणी बाणो बभूव	–	गोवर्धनाचार्य
बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं	–	समालोचक
बाणः कविनामिह चक्रवर्ती	–	सोड्ढल
महानयं भुजङ्गः	–	हर्षवर्धन
वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य	–	धर्मदास
तुरङ्गबाण	–	आलोचक
यादृक् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धेऽपि तादृशः	–	भोजराज

कृतियाँ-

- आख्यायिका - हर्षचरितम्,
- कथा - कादंबरी,
- मुक्तककाव्य - चंडीशतकम्,
- नाटक – मुकुटताडिकम्,पार्वतीपरिणय,

10. दंडी

दंडी संस्कृत के प्रसिद्ध साहित्यकार थे, जो छठी शताब्दी के अंत और सातवीं शताब्दी के प्रारंभ में सक्रिय थे। संस्कृत श्रृंगारिक गद्य के लेखक और काव्यशास्त्र के व्याख्याकार के रूप में उनकी दो महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सामान्यत: निश्चित रुप से उनकी मानी जाती हैं। **'दशकुमारचरित'**, 1927 में **'द एडवेंचर्स ऑफ़ द टेन प्रिंसेज'** शीर्षक से अनुदित।

जन्म विवाद- दंडी के जीवन के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनाओं का बहुत अभाव है। कोई उन्हें सातवीं शती के उत्तरार्ध या आठवीं शती के आरम्भ का मानता है तो कोई इनका जन्म 550 और 650 ई. के बीच मानता है। अवंतीसुंदरी की कथा के अनुसार दंडी किरातार्जुनीयम् के रचयिता भारवी के प्रपौत्र थे । इनकी बाल्यावस्था में इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया था ।

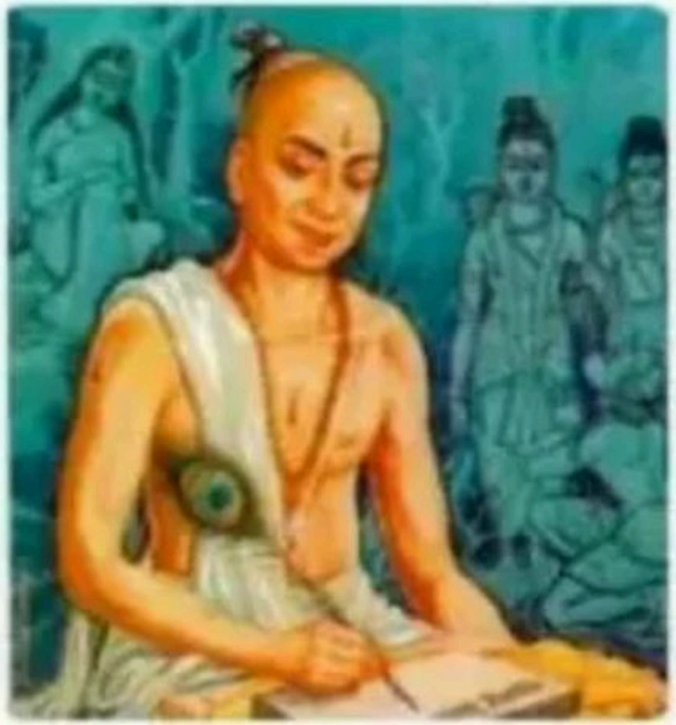
कृतियाँ-

1. दशकुमारचरितम्,
2. काव्यादर्श,

दण्डी का सामान्य परिचय-

- **समय** - छठी शताब्दी (550-650 ई.)
- **पिता** - वीरदत्त
- **माता**- गौरी
- **निवास**- दक्षिण में विदर्भ महाराष्ट्र ।
- भारवि के पुत्र- **मनोरथ**
- मनोरथ के चारों पुत्रों में छोटा पुत्र- **वीरदत्त**
- वीरदत्त के पुत्र- **दंडी** ।
- **भारवि → मनोरथ → वीरदत्त → दंडी** ।
- परिष्कृत गद्य शैली में जन्मदाता- **दंडी** ।
- **शैली** - वैदर्भी शैली भाषा गुण- प्रसाद माधुर्य गुण भावों की अभिव्यंजना शक्ति प्रबल है ।
- इनकी दृष्टि यथार्थवादी है, समाज के सभी वर्गों के पात्रों को लिया है, यह आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी और व्यवहारवादी हैं।

11. भवभूति



भवभूति संस्कृत के महान कवि एवं सर्वश्रेष्ठ नाटककार थे। उनके नाटक कालिदास के नाटकों के समतुल्य माने जाते हैं। भवभूति ने अपने संबंध में **'महावीरचरितम्'** की प्रस्तावना में लिखा है। ये विदर्भ देश के **'पद्मपुर'** नामक स्थान के निवासी **भट्टगोपाल** के प्रपोत्र थे। इनके **पिता** का नाम **नीलकंठ** और **माता** का नाम **जतुकर्णी** था। इन्होंने अपना उल्लेख **'भट्टश्रीकंठ पदलांछनी भवभूतिर्नाम'** से किया है। इनके गुरु का नाम **'ज्ञाननिधि'** था। भवभूति विदर्भ (महाराष्ट्र राज्य) के **ब्राह्मण कन्नौज** (उत्तर प्रदेश राज्य) के राजा यशोवर्मन के दरबार में थे। भवभूति अपने तीन नाटकों के लिए विशेष रुप से प्रसिद्ध थे– **महावीरचरिम्, मालतीमाधवम्, उत्तररामचरितम्** । भवभूति का **जन्म सातवीं शताब्दी** के उत्तरार्ध माना जाता है ।

unacademy

भवभूति का सामान्य परिचय-

- समय – 650 ई. से 750 ई. के मध्य (सातवीं शताब्दी उत्तरार्ध)
- जन्म- दक्षिण भारत पद्मपुर,
- पिता- नीलकंठ,
- माता- जातुकर्णी या जतुकर्णी
- पितामह- भट्टगोपाल
- गुरु – 1. ज्ञाननिधि 2. कुमारिलभट्ट
- प्रिय छंद- अनुष्टुप, शिखरिणी
- प्रिय रस - करुण
- रीति- गौडी, उत्तररामचरितम् में वैदर्भी रीति का भी प्रयोग किया है।
- उपासक- शिव के,

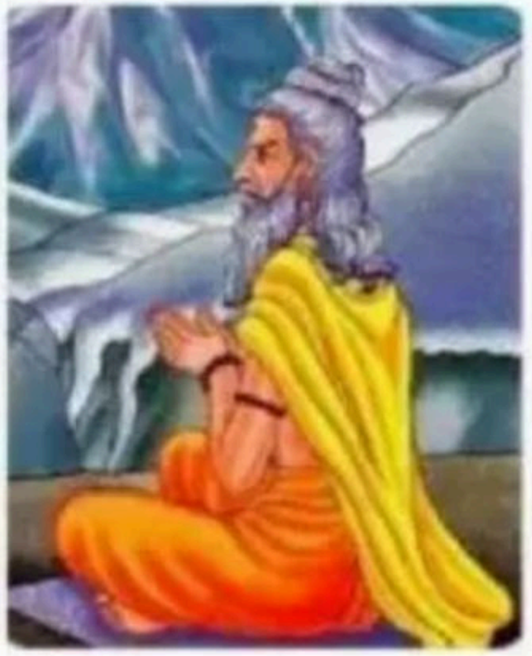
भवभूति के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- भवभूति का मूलनाम- श्रीकण्ठ (कवि के रूप में भवभूति के नाम से विख्यात)
- भवभूति का दार्शनिक नाम – **उदुम्बर/उम्बिकाचार्य/उम्बेक।**
- ये विविध शास्त्रों के विशेषज्ञ थे अतः इनकों **"पदवाक्यप्रमाणज्ञः"** कहा जाता है ।
- **पद = (व्याकरण),** **वाक्य = (मीमांसा),**
- **प्रमाण = (न्याय),** **ज्ञः = (ज्ञाता)।**
- **'महावीरचरितम्'** में इन्होंने अपने को **'परिणतप्रज्ञः'** कहा है।
- **'उत्तररामचरितम्'** में इन्होंने अपने को **'वश्यवाक्'** कहा है।
- भवभूति के नाटकों में **'अभिधावृत्ति'** मुख्य है तथा भवभूति की कृतियों में **'ओजगुण'** अधिक है।

कृतियां-

- ❖ नाटक- उत्तररामचरितम् (7अंक), महावीरचरितम (7अंक)
- ❖ प्रकरण ग्रंथ- मालतीमाधवम् (10अंक) ।

12. भट्टनारायण



भट्टनारायण संस्कृत के महान नाटककार थे। इनका समय **सातवीं आठवीं शताब्दी ई.** माना जाता है। भट्टनारायण का जीवनवृत्त अनिश्चित है किंतु वामन और आनंदवर्धनाचार्य के ग्रंथों में **वेणीसंहार** के उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि यह उनसे पूर्ववर्ती हैं। वे अपनी केवल एक कृति **वेणीसंहार** के द्वारा संस्कृत साहित्य में अमर हैं। संस्कृत वाङ्मय में समुपलब्ध नाटकों में इसका विशिष्ट स्थान है। विद्वज्जन इसे नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुकूल दृष्टिकोण से लिखा गया नाटक मानते हैं इसीलिए इसके उदाहरणों को अपने लक्षणग्रंथों में **वामन, विश्वनाथ** आदि ने विशेष रूप से उद्धृत किया है। कवि ने **वेणीसंहार** की प्रस्तावना में अपने आप को **"मृगराजलक्ष्मा"** कहा है । इससे ज्ञात होता है कि इन्हें **'कविंद्र' या 'कविमृगेंद्र'** कहा जाता था।

- **समय** - सातवीं आठवीं शताब्दी।
- **कृति**- वेणीसंहार एकमात्र नाटक (6अं
- **उपाधि**- मृगराज, कविमृगेंद्र, कविंद्र ।

unacademy

13. विल्हण

बिल्हण कश्मीर के प्रसिद्ध कवि थे । इनका समय **ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध** माना जाता है। जिनकी रचना **चौरपंचाशिका** प्रसिद्ध है। उनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना **विक्रमांकदेवचरितम्** है जो इतिहास ग्रन्थ है। बिल्हण के **विक्रमांकदेवचरितम्** में कल्याण के चालुक्य राजा **विक्रमादित्यपंचम्** (1076-1127) के पराक्रमों का वृत्तांत है।

विल्हण का सामान्य परिचय-

- **पिता-** जेष्ठकलश
- **पितामह-** राजकलश
- **माता-** नागदेवी
- **जन्म स्थान-** कश्मीर (खौनमुख गांव)

कृतियां -

1. विक्रमाङ्कदेवचरितम् (18 सर्ग),
2. कर्णसुंदरी,
3. चौरपञ्चाशिका,
4. सूक्तिमुक्तावली,
5. सुभाषितावली,

उपाधि- विद्यापति ।

unacademy

14. श्रीहर्ष

श्रीहर्ष की गिनती प्रसिद्ध कवियों में होती है। इनका समय 12वीं **शताब्दी का उत्तरार्ध** है। वह बनारस एवं कन्नौज के **गहड़वाल शासकों, विजयचन्द्र एवं जयचन्द्र** की राजसभा को सुशोभित करते थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की, जिनमें **'नैषधचरितम्'** महाकाव्य उनकी कीर्ति का स्थायी स्मारक है। **अलंकृत शैली** के सर्वश्रेष्ठ कवि श्रीहर्ष में उच्चकोटि की काव्यात्मक प्रतिभा थी तथा वे अलंकृत शैली के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। श्रीहर्ष महान् कवि होने के साथ-साथ बड़े दार्शनिक भी थे। **'खण्डन-खण्ड-खाद्य'** नामक ग्रन्थ में उन्होंने अद्वैत मत का प्रतिपादन किया। इसमें न्याय के सिद्धान्तों का भी खण्डन किया गया है। व्यूलर के अनुसार हर्ष का निर्विवाद समय 12 वीं शताब्दी उत्तरार्ध है ।

जीवन चरित्र-

कन्नौज के राजा जयचंद्र उनके आश्रय दाता थे । इन्होनें चिंतामणि जप के फलस्वरुप सिद्धि और विद्वत्ता प्राप्त की । इनके द्वारा रचित ग्रन्थ बृहत्त्रयी का सर्वोत्कृष्ट रत्न **नैषधीयचरितम्** 22 सर्गात्मक है । श्रीहर्ष के काव्य में भाषा सौंदर्य, भाव सौष्ठव और पदलालित्य है ।

श्रीहर्ष का सामान्य परिचय-

- **समय** – 12 शताब्दी उत्तरार्ध
- **पिता**- श्रीहीर,
- **माता**- मामल्ल देवी,

  "श्रीहीरः सुषुवे जितेन्द्रियचयं मामल्लदेवी च यम्" – (नैषध.1.145)
- **निवास**- कन्नौज

कृतियाँ- 1. स्थैर्यविचारप्रकरण, 2. श्रीविजयप्रशस्ति, 3. छिंदप्रशस्ति, 4. खंडनखंडखाद्य, 5. शिवशक्तिसिद्धि, 7. नैषधीयचरितम्, 8. अर्णव वर्णन, 9. गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति

15. अंबिकादत्तव्यास



अम्बिकादत्तव्यास ब्रजभाषा के कुशल और सरस कवि थे। इनका समय 1858-1900 ई. माना जाता है। ये 'भारतेन्दु युग' के कवि और लेखक थे। ये भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समकालीन तथा उनसे प्रभावित हिन्दी सेवी साहित्यकार थे। 12 वर्ष की अवस्था में **'काशी कविता वर्धिनी सभा'** ने 'सुकवि' की उपाधि से इन्हें सम्मानित किया था। अम्बिकादत्त व्यास की प्रशंसा भारतेन्दु ने **'कविवचन सुधा'** में भूरि-भूरि की है। ये विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। इन्हें **हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, बांग्ला, दर्शन, न्याय, वेदान्त** में महारथ हासिल थी। इन्होंने गद्य और पद्य में 50 से अधिक पुस्तकें लिखी थीं। व्यास जी का आश्चर्यजनक वृत्तांत अपने समय में **'फन्तासी'** उपन्यास था। **शिवराजविजय** इनका महत्वपूर्ण संस्कृत उपन्यास है।

काशी से **'वैष्णव-पत्रिका'** (1884 ई.) का आरम्भ इन्होंने किया था, जो बाद में **'पीयूष-प्रवाह'** नाम से साहित्यिक पत्रिका में रूपांतरित हो गयी। **कवित्त और सवैया शैली** में इनकी ब्रजभाषा की अनेक रचनाएँ लोकप्रिय

unacademy

अबिकादत्तव्यास का सामान्य परिचय-

- **समय** - 1858-1900 ई.
- **पिता**- दुर्गादत्त
- **पितामह** – पं राजाराम
- **चाचा** – देवीदत्त
- **पुत्र** – पं. राधाकुमारव्यास
- **गोत्र** – पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी/त्रिप्रवर/भीडावंश
- **जन्मस्थान**- जयपुर राजस्थान
- **कर्मस्थली** – काशी
- **पत्रिका** – पीयूष प्रवाह का सम्पादन

अम्बिकादत्तव्यास के जीवन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- अम्बिकादत्तव्यास प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास के प्रणेता हैं।
- बिहार में **'संस्कृत सञ्जीवनी समाज'** की स्थापना की।
- एक घड़ी (24 मिनट) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को **घटिकाशतक** का उपाधि दी गई थी।
- सौ प्रश्नों को एकसाथ ही सुनकर उन सभी प्रश्नों का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्भुतक्षमता होने से उन्हें **शतावधान** की उपाधि दी गई थी।

unacademy

कृतियाँ-

इन्होंने हिंदी तथा संस्कृत में छोटी-बड़ी 78 पुस्तकें लिखी ।

उपन्यास-

1. शिवराजविजयम् (3) विराम, प्रत्येक विराम में चार निश्वास।
2. गद्यकाव्यमीमांसा
3. अवतारमीमांसाकारिका
4. कथाकुसुम
5. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्
6. सहस्रनामरामायणम्
7. मित्रलाभ
8. दुःखद्रुमकुठार

नाटक- 9. सामवतम् ।

उपाधि-

1. घटिकाशतक (ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा)
2. सुकवि
3. शतावधान
4. अभिनवबाण/आधुनिकबाण
5. भारतरत्न (काशी की महासभा)
6. भारतभूषण
7. महाकवि

unacademy

16. पंडिता क्षमाराव

पण्डिता क्षमाराव (4 जुलाई 1890 - 22 अप्रैल 1954) एक संस्कृत विदुषी थीं जिन्होंने संस्कृत साहित्य में नूतन विधाओं तथा विषयवस्तु का अवतरण किया। वे गार्गी एवं मैत्रेयी की परम्परा को आगे बढाने वाली संस्कृत कवयित्री हैं। उन्होंने कथाओं को भी पद्य में लिखा। चरितकाव्य के अन्तर्गत उन्होंने तुकारामचरित, रामदासचरित तथा ज्ञानेश्वरचरित का ग्रथन किया। गांधी जी के सत्याग्रह से प्रभावित होकर उन्होंने **'सत्याग्रहगीता'** नामक महाकाव्य की रचना की जो 1932 में पेरिस से प्रकाशित हुआ। अपने पिता की जीवनी लेखन से पण्डिता क्षमाराव ने संस्कृत साहित्य में नई विधा का सूत्रपात किया। दुर्भाग्य से तीन वर्ष की अल्प आयु में ही उनको पितृ-वियोग सहना पड़ा। पिता की मृत्यु के पश्चात् क्षमा का बचपन अपनी चाची के घर घोर कष्टों और अभावों में बीता। प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी मेधाविनी क्षमा 10 वर्ष की आयु से ही संस्कृत और अंग्रेजी में कविताएं लिखने लगी थी।

unacademy

20 वर्ष की आयु में उनका विवाह प्रसिद्ध चिकित्सक **डॉ. राघवेन्द्र राव** के साथ हो गया। 1911 में पति के साथ यूरोप-भ्रमण के दौरान उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का अभ्यास किया, पाश्चात्य संगीत, पियानो-वादन और टेनिस में प्रवीणता प्राप्त की। यूरोप की संस्कृति को निकट से जानकर अंग्रेजी भाषा में उत्तम साहित्य की रचना की। वे यूरोप के अनेक विद्वानों और साहित्यकारों के सम्पर्क में आईं।

पंडिता क्षमाराव सामान्य परिचय -

- समय- (1890 – 1954)
- माता- उषा देवी,
- पिता- शंकर पांडुरंग (संस्कृत के विद्वान और बाल्यावस्था में निधन)
- भाषा- प्रसादमयी,
- पति- डॉ राघवेंद्रराव,
- गुरु- विद्यालंकार पंडित नगण्य
- उपाधि- पंडिता
- क्षमाराव ने छोटी-बड़ी 50 पुस्तकें लिखी जिसमें सात एकांकी चार तीन अंक वाले नाटक चार पद्य जीवन चरित्र 35 लघु कथाएं तथा विविध निबंध ग्रंथ हैं ।

कृतियाँ-

- ❖ काव्यात्मक रचनाएं-
  1. कथा पंचक (पद्यबंध)
  2. ग्राम ज्योति
  3. कथा मुक्तावली
- ❖ खंडकाव्य- मीरा लहरी
- ❖ महाकाव्य - 1. तुकारामचरित 2. रामदासचरितम 3. विज्ञानेश्वर चरित 4. सत्याग्रह गीता 5. उत्तर सत्याग्रह गीत गांधी चरित्र इत्यादि भी इनकी रचनाएं हैं । स्वराजविजयम् (45) अध्याय में गांधी की संपूर्ण जीवन माया के साथ स्वतंत्र इतिहास वर्णन है।

unacademy

17. वी. राघवन (वेंकटराम राघव)

वी. राघवन संस्कृत के विद्वान तथा संगीतज्ञ थे । इनका समय 1908-1979 है।

इन्हें **पद्मभूषण** और संस्कृत के लिए **साहित्य अकादमी पुरस्कार** सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुऐ हैं । ये 120 से अधिक पुस्तकों तथा 1200 लेखों के लेखक थे इन्होंने संगीत तथा सौंदर्यशास्त्र पर किताबें लिखी । इन्होंने संस्कृत काव्य के बड़े जाने-माने काव्य भोज के अंग का संपादन और अनुवाद किया । 1996 इन्हें **जवाहरलाल फेलोशिप** से सम्मानित किया गया । रविंद्र नाथ टैगोर का पहला नाटक **वाल्मीकि प्रतिभा** का इन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया ।

कृतियाँ-

- **नाटक-** अभिनव सुंदरी, महाश्वेता, रासलीला, विकट नितंब लक्ष्मी स्वयंवरम्, अनारकली ।
- **महाकाव्य-** श्री मुत्तुस्वामीदीक्षित चरितम् ।
- **लघुकाव्य-** 1. पैशुन्य 2. महात्मा 3. फाल्गुन 4. कर्मयो 5. मध्याह्न 6. उषा 7. प्रतीक्षा
- **संस्कृत की अन्य कृतियां-**
  संस्कृत रविंद्रम्, वाल्मीकि प्रतिभा, नटीर पूजा,
- **अन्य-** अभिनव गुप्त एवं उनके कार्य, श्रृंगार मंजरी, पला मनदाना (प्रहसन), अलंकार शास्त्र विरुपहा का चो चंपू ।
- **स्तोत्र काव्य-** श्री कामाक्षीमातृका स्तोत्र, श्री मीनाक्षीसुप्रभात

18. श्रीधरभास्कर वर्णेकर



श्रीधरभास्कर वर्णेकर का जन्म 31 जुलाई 1918 महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ । कांची पीठ के शंकराचार्य ने प्रज्ञा भारती की उपाधि से इनको विभूषित किया इन्होंने **अर्वाचीन संस्कृत साहित्य** नाम से मराठी में शोध प्रबंध लिखा और **संस्कृत भवितव्यम्** पत्रिका का संपादन किया इन्हें **रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी** सम्मान भी मिला ।

❖ **पुरस्कार**

- साहित्य अकादमी पुरस्कार-1974
- राष्ट्रपति पुरस्कार, सरस्वती पुरस्कार

कालिदास सम्मान ।

उपाधि- प्रज्ञा भारती ।

कृतियाँ-

❖ **लघु काव्य-** श्रमगीता 118 पद्य ।

❖ इनका छत्रपति शिवाजी के चरित्र पर निर्मित महाकाव्य श्री शिवराज्योदय (68) सर्गात्मक है ।

❖ वात्सल्यरसायनम् इस काव्य का दूसरा नाम (श्रीकृष्णबाललीला शतकम्) है ।

❖ संस्कृतवाङ्मय कोश ।

❖ भारतरत्नशतकम् ।

❖ स्वातन्त्र्यवीरशतकम् ।

unacademy

1. काव्यलक्षणविचारे "स्ववचनविरोधाद् अपास्तम्" इति कथनेन कस्य मतं विश्वनाथेन निराकृतम्?

(A) आनन्दवर्धनस्य
(B) वामनस्य
(C) मम्मटस्य
(D) व्यक्तिविवेककारस्य

2. साहित्यदर्पणमते नीलवर्णः महाकालदैवतः रसः कः भवति?

(A) रौद्रः
(B) वीरः
(C) भयानकः
(D) बीभत्सः

3. जतुकर्णीपुत्रः भवति-

(A) भवभूतिः
(B) कालिदासः
(C) माघः
(D) श्रीहर्षः

unacademy

4. शाकुन्तले दुष्यन्तपुत्रस्य प्रथमं नाम किम् आसीत्?

(A) भरतः (B) सर्वदमनः

(C) गौतमः (D) वातायनः

5. साहित्यदर्पणानुसारेण एषु कस्य रूपकमध्ये गणनं न भवति-

(A) समवकारस्य (B) नाटिकायाः

(C) प्रकरणस्य (D) प्रहसनस्य

6. "दोषा गुणा-गुणा दोषा यत्र स्युर्मृदवं हि तत्" - दशरूपके कस्मिन् प्रसङ्गे इयमुक्तिः ?

(A) वीथ्यङ्गप्रसङ्गे (B) नृत्यलक्षणप्रसङ्गे

(C) सन्धिभेदप्रसङ्गे (D) प्रहसनलक्षणप्रसङ्गे

unacademy

10. एषु किं पर्व महाभारते नास्ति -

(A) द्रोणपर्व (B) भीष्मपर्व

(C) युधिष्ठिरपर्व (D) शल्यपर्व

11. महाभारताश्रितं न भवति-

(A) वेणीसंहारम् (B) दूतवाक्यम्

(C) मध्यमव्यायोगः (D) अभिषेकनाटकम्

12. 'ज्ञानविज्ञानयोगः' श्रीमद्भगवद्गीतायाः कतमोऽध्यायः-

(A) द्वितीयोऽध्यायः (B) तृतीयोऽध्यायः

(C) पञ्चमोऽध्यायः (D) सप्तमोऽध्यायः

13. एषु कस्य महापुराणेषु अन्तर्भावो नास्ति-

(A) मत्स्यपुराणस्य (B) ब्रह्मपुराणस्य

(C) अग्निपुराणस्य (D) साम्बपुराणस्य

15. अधस्तनयुग्मानां समीचीनतालिकां चिनुत-

(अ) उत्तररामचरितम्	(i) भासः
(ब) बुद्धचरितम्	(ii) भवभूतिः
(स) वेणीसंहारम्	(iii) भट्टनारायणः
(द) स्वप्नवासवदत्तम्	(iv) अश्वघोषः

	(अ)	(ब)	(स)	(द)
(A)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(B)	(ii)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

16. सर्वदमनस्य अपरं नाम किम् आसीत् ?

(A) रोहितः (B) नागार्जुनः

(C) भरतः (D) गौतमः

unacademy

धन्यवाद